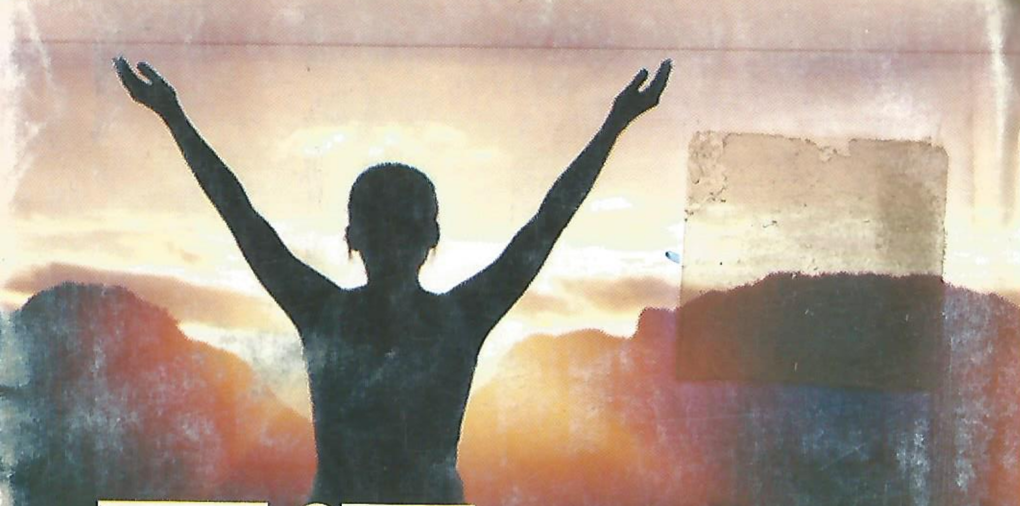

क्या आप
स्वतंत्रता चाहते हैं?
तो पढ़िये...

सत्यव्रत का पालन करके
राजा हरिशचन्द्र जगत में अमर हो गये

धर्मरुचि अणगार कीडियों (चींटी की
दया पाल कर सद्गति को प्राप्त हुए।

''चाणक्य'' प्रतिज्ञा करते हैं मेरी प्रतिज्ञा का
संपूर्ण पालन होने पर ही केश बांधूगा

अपने पिता की भावना को पूर्ण करने के लिए
आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत धारण करने से गांगेय
भीष्मपितामह कहलाये

कच्चा पानी भारी होता है
कच्चा पानी अशुद्ध होता है
कच्चा पानी संक्रामक रोगों का जन्मदाता है

आपने पढ़ा होगा
- गुरु करो जानकर, पानी पीयो छानकर
- बिना छाने पानी न पिएँ न्हारु निकलेगा

संकलनः
पूज्य श्री कान गुरुदेव के शिष्य
अभिग्रहधारी, उग्र विहारी- राजेश मुनिजी म.सा.
सेवा भावी - राजेन्द्र मुनिजी म.सा.

जिनकी प्रेरणा से यह पुष्प आपके हाथों में है ...

1. संजय, हर्षित, विवेक देशलहरा, इन्दौर
2. राजेन्द्र, नरेश, पंकज डाकोलिया, इन्दौर-बड़वाह
3. मंजूला बहन, हिमांशु भाई, कल्पनाजी, प्राची, सुविधि, स्नेहल बोरादरा परिवार, इन्दौर
4. मिनाक्षी नरेन्द्र भाई दोषी, इन्दौर
5. एक सद्‌गृहस्थ द्वारा
6. हंसमुख लाल राजेन्द्रकुमार गोलेच्छा, लीमड़ी
7. पारस बाई एवं बाबूलालजी कांकलीया, खरगोन
8. निर्मला नरेन्द्रकुमार मेहता (मुनीमजी की दुकान)
9. श्री अनूपकंवर, प्रेमदेवी, अमरसिंहजी, सुनीता विक्रमजी, अंशु हेमेन्द्र, सार्थक, चेरी, चारमी, प्रियांश, अवन्या एवं समस्त नाबेड़ा परिवार एवं अंजू सुनील बोहरा

   259, गुमास्ता नगर, इन्दौर

   मोबाईल नं. : 09977766000

जय गुरु सौभाग्य ! सूर्य उमेश ! लालमान ! कान पारस गुलाब गुरुभ्यों नमः

आशीर्वाद प्रदाताः
जिनशासन गौरव अध्यात्मयोगी
आचार्य प्रवर पूज्य श्री उमेश मुनिजी म.सा. ''अणु''
तपस्वी पूज्य श्री कानमुनिजी म.सा.

क्या आप स्वतंत्र होना चाहते हैं? तो पढ़िये ...

संकलन

श्री राजेश मुनि, राजेन्द्र मुनि

अनुसंकलन

सुनीता पिलापचन्द, प्रीति तेजपाल काकल्या, खरगोन
सुशीला देशलहरा, लोकेश-मीना खाबिया, इन्दौर

प्राप्ति स्थलः
संजय देशलहरा
40, तिलक पथ,
विमल कलेक्शन, इन्दौर
मोबाईल : 098270 17077

प्रतीक भटेवरा
35, उषा नगर एक्सटेंशन, इन्दौर
मोबाईल : 094245 04504

प्राप्ति स्थलः
जैन जनरल स्टोर्स
28, रुद्रेश्वर कालोनी,
बिस्टान नाका, खरगोन
मोबाईल : 94250 89236

गौतम खाबिया
कुशलगढ़
मोबाईल : 094136 25335

प्रकाशकः
आगम ज्ञान प्रसार समिति
28, रुद्रेश्वर कॉलोनी, बिस्टान नाका, खरगोन 450 001 (म.प्र.)

सद्‌उपयोग राशि 25/-

अनुक्रमणिका

पच्चक्खाण के विषय में विशेष बिंदु 3
- पच्चक्खाण लेने से निम्नलिखित फायदे हैं 4
- पच्चक्खाण लें और टूट जाये तो? 4
- पाप करते ही नहीं तो पच्चक्खाण क्यों करें? 5
- पच्चक्खाण बंधन है कि रक्षक? 6
- नियम, व्रत, पच्चक्खाण (आचार्य भगवंत पूज्य श्री उमेश गुरुदेव का चिंतन) 6
- नियम लेना आवश्यक क्यों है? क्या मन के संकल्प से नियम पालन नहीं हो सकता? 6
- धर्म हृदय में होना चाहिए- फिर दिखावा करने की क्या जरूरत? 7
- प्रतिज्ञा लेकर तोड़ने वालों की अपेक्षा प्रतिज्ञा न लेने वाला ही अच्छा है। 8
- हम जिस अधर्म-आचरण को करते ही नहीं हैं, उसके प्रत्याख्यान लेने से क्या लाभ? 9
- पच्चक्खाण को बन्धन मानना ठीक है क्या? 10
  (अ) पच्चक्खाण लेने से क्या फायदा है? 11
  (आ) क्या तीर्थंकर भगवान भी पच्चक्खाण करते हैं? 11
- जिसको ज्ञान होता है उसी को पाप लगता है? 17
- किस नियम का कितना फल 17
- उपवास का फल 18
- मोक्ष मार्ग में ज्ञान के साथ क्रिया की आवश्यकता कैसे? सिद्ध कीजिये। 20
- आयम्बिल के विषय में जानकारी दीजिए? 21
- पच्चक्खाणों का विधान (अन्य मान्यता) 22

धोवनपानी 23
- बनाने की विधि 26
- धोवन पानी घृणा योग्य नहीं 28
- अल्काइन पानी क्या है 29

महात्मा गांधी ने 40 वर्ष की उम्र के बाद कभी रात्रि भोजन नहीं 37
- रात्रि भोजन से हानि 37
- रात्रि भोजन निषेध के पक्षकार कौन? 38
- जैन शास्त्रों में रात्रि भोजन त्याग का विधान कहाँ-कहाँ है? 39
- रात्रि भोजन नहीं करने से लाभ 39
- BREAK FAST 40
- रात्रि भोजन त्याग करना सरल किसके लिए? 42

प्रसंग 42
- गुरु कृपा वर्षा 43
- जमीकंद/कंदमूल 43
- कोर्ट में मोबाइल बजा एक माह की सजा 45
- पैदल चलना बहुत जरूरी 45
- आईसक्रीम शाकाहार नहीं है 46

पच्चक्खाण के विषय में विशेष बिंदु

- पच्चक्खाण भविष्य काल का होता है।
- भोग उपभोग वृत्ति का त्याग, इन्द्रिय नियंत्रण करना प्रत्याख्यान है।
- प्रत्याख्यान, पच्चक्खाण, नियम, संकल्प, बाधा (गुजराती में) त्याग मर्यादा सभी एक-दूसरे के पर्यायवाची है।
- अनुयोगद्वार सूत्र में प्रत्याख्यान का नाम ''गुण धारण'' बताया है।
- प्रत्याख्यान से इच्छा निरोध होता है।
- तप के प्रत्याख्यान में अंत में ''वोसिरामि'' आता है
- पाप के प्रत्याख्यान के अंत में ''अप्पाणं वोसिरामि कहा जाता है।
- दोषों की पुनः उत्पत्ति को रोकने के लिए प्रत्याख्यान आवश्यक है।
- संकल्प पूर्ण न होने में कठिनाईयाँ प्रथम-अतिकल्पना दूसरा-संदेह
- संकल्प सिद्धि के बीच का मार्ग है ''साधना''
- त्यागना धर्म है- देना पुण्य है।
- राग द्वेष मॉबाप स्त्री पुत्र परिवार का दान नहीं होता त्याग होता है।
- ज्ञान एवं अभय का त्याग नहीं दान होता है।

❑❑❑

❖ पच्चक्खाण लेने से निम्नलिखित फायदे हैं:

1. पच्चक्खाण लेने से उसे उस तरफ के भाव, विचार, व्यापार बंद हो जाते हैं और उससे कर्मबंध रुक जाते हैं।
2. व्रत पच्चक्खाण से सम्यक दर्शन की पुष्टि होती है और अंत में मोक्ष प्राप्त होता है। जबकि बिना पच्चक्खाण समकिती भी भटक जाते हैं।
3. व्रत लेने से परिणाम, विचार शुभ होते हैं और कषाय मंद होती है।
4. व्रत लेने से भूतकाल में हुए पाप की निर्जरा और भविष्य में होने वाले पापों का निरोध होता है।
5. व्रतधारी धर्मी कहलाते हैं। युगलिक सत्यवादी, सरल व एक पत्नी वाले होते हैं, फिर भी धर्मी नहीं कहलाते (अव्रती कहलाते) हैं। जबकि 13 पत्नियों से अधिक के पच्चक्खाण करने वाले महाशतकजी व्रतधारी धर्मी कहलाये।
6. व्रतधारी श्रावक निश्चित 12 वें देवलोक तक जा सकता है, जबकि अव्रती का देवगति में जाना अनिश्चित है।
7. व्रतधारी की सद्‌गति होती है जिस प्रकार आनन्द, शंख आदि। अव्रतधारी की दुर्गति होती है जिस प्रकार श्रेणिक, ब्रह्मदत्त आदि।
8. दुधारू ढोर खूँटे से बंधे रहते हैं, जबकि हिराये (खुल्ले) ढोर जहाँ-तहाँ भटकते हैं। व्रतधारी आत्मा दुधारू ढोरवत् है और अव्रती आत्मा हिराये ढोर समान कहलाता है। अब सोचे आपको कैसा कहलाना है?

❖ पच्चक्खाण लें और टूट जाये तो?

यह उनकी अल्पज्ञता है उनको समझाने के लिए निम्न उदाहरण पेश कर सकते हैं:

1. दुकान खोलने के बाद दिवाला निकल जाए तो...
2. परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाएँ तो...
3. संतान को पढ़ा-लिखाकर होशियार करें और भाग जाए तो....
4. लड़की की शादी करें और विधवा हो जाए तो....
5. वाहन में बैठें और दुर्घटना हो जाए तो....

इस प्रकार विचार करके उपरोक्त कार्य करना ही नहीं, ऐसा कोई सोचता नहीं। यह ठीक है कि अपनी शक्ति के अनुसार ही लेना चाहिये। बड़े-बड़े व्रत न ले सको तो छोटे-छोटे पच्चक्खाण से वंचित नहीं रहना चाहिये जिस प्रकार कि...

1. 10,000 रुपये वाले को 10 हजार का व्यापार करने में विचार आ जाए तो वह 2-4 हजार का व्यापार तो कर सकता है।
2. जिस प्रकार खीर-पूड़ी का शौक हो पर शक्ति न हो तो सब्जी-रोटी खाते हैं और वह भी न हो तो चना-परमल खाते हैं, किन्तु भूखे तो नहीं रहते हैं।
3. एयर कंडिशन बँगले की सुविधा न हो तो झोपड़ी ही अच्छी है परन्तु गाय, कुत्ते आदि जानवर की तरह बाहर तो नहीं रह सकते।

इसलिये आगार धर्म सोने के समान है जितनी अनुकूलता-शक्ति हो उतना खरीदें।

❖ पाप करते ही नहीं तो पच्चक्खाण क्यों करें?

पच्चक्खाण तो हमेशा करना ही चाहिए चाहे पाप करें या न करें उसकी पुष्टि के लिए हम निम्न तर्कों के माध्यम से इसे समझ सकते हैं:

1. जिस प्रकार से किसी किरायेदार ने मकान खाली कर दिया पर मकान मालिक को सौंपा नहीं। अर्थात् उससे सम्बन्ध नहीं तोड़ा तब तक उसको किराया देना पड़ता है, ठीक इसी भांति कोई व्यक्ति चाहे पाप न करें परन्तु उसे पच्चक्खाण लेकर पाप आदि से सम्बन्ध नहीं तोड़े, तब तक उसका अव्रत रूप पाप लगता ही है।
2. जिस प्रकार से किसी मुनीम ने सेठ की दुकान खुली रख दी उसमें से भले चोरी न हुई, फिर भी सेठजी मुनीम को दोषी गिनता है। आज नहीं हुई तो क्या भविष्य में भी चोरी नहीं होगी? ऐसा सोचना ठीक नहीं कहलायेगा। ठीक इसी भांति व्यक्ति पाप न करे, परन्तु पाप न हो उसकी सावधानी न रखे तो प्रमाद के कारण आस्रव लगता ही है।
3. वासुदेव समकिती होने पर भी अव्रत के कारण ही (तीव्र भोगी बनकर) नरक में चले जाते हैं।
4. यदि पच्चक्खाण की आवश्यकता नहीं होती तो ज्ञानियों ने इस मार्ग की प्ररूपणा ही क्यों की होती? जहाँ-तहाँ लिखा है कि अव्रत से क्रिया लगती है व श्रेणिक महाराज नवकारसी का तप कर लेते तो नरक में नहीं जाते, तो क्या वे एक घंटा भूख सहन नहीं कर सके? ऐसा नहीं, अप्रत्याख्यान का उदय समझना।
5. देवताओं को कई दिनों तक आहार की इच्छा नहीं होती, लेकिन उनका निराहार रहना तप नहीं कहा जाता। प्रत्याख्यान का भी अपना महत्व है।

6. घर में बिजली का मीटर लगा है तथा 4 महीने के लिये बाहर चले गये फिर भी कुछ बिजली का बिल तो आयेगा ही। वैसे ही व्रत नहीं धारण करने से पाप की रावी तो आयेगी ही।

इस प्रकार से इन समस्त तर्कों से इस बात की पुष्टि होती है कि पाप न करें फिर भी प्रत्याख्यान तो करने (लेने) ही चाहिये।

❖ पच्चक्खाण बंधन है कि रक्षक?

पच्चक्खाण रक्षक है न कि बंधन, इस संबंध में निम्न तर्क प्रस्तुत हैं:

1. लकड़ी, कचरा आदि तुच्छ वस्तु को बंधन बिना खुल्ला ही रखा जाता है, जबकि मूल्यवान वस्तु को उत्तरोत्तर अधिक बंधन में रखा जाता है। जिस प्रकार अनाज कोठे में, पैसे पॉकेट में, आभूषण तिजोरी में रखे जाते हैं और ऊपर से ताला भी लगाया जाता है।
2. जिस प्रकार गाड़ी को ब्रेक, खेत को बाड़, नदी को किनारा, पर्स को बटन, पतंग को धागा, मनुष्य को मकान, सांकल को ताला इत्यादि बंध से उसकी कीमत और सुरक्षा है, उसी प्रकार व्रत पच्चक्खाण बंधन नहीं रक्षक है।
3. व्रत प्रत्याख्यान कैद नहीं पर किला है। कैद बन्धन है, किला सुरक्षा का साधन है।

नियम, व्रत, पच्चक्खाण

आचार्य भगवंत पूज्य श्री उमेश गुरुदेव का चिंतन

❖ नियम लेना आवश्यक क्यों है? क्या मन के संकल्प से नियम पालन नहीं हो सकता?

किसी की साक्षी से जो काम होता है, वह पक्का काम होता है। जैसे कि कोई किसी को पैसे–रुपए आदि उधार देता है या आभूषण आदि गिरवी रखता है, उसमें साक्षी रखी जाती है। उस साक्षी से उसे कहीं भी धोखा खाने जैसी स्थिति नहीं रहती।

इसी प्रकार से व्रत–नियम आदि करने में गुरु की साक्षी आवश्यक है। मन के संकल्प से नियमपालन की बात कहते हैं परन्तु मान लो कि कोई मन से ही विवाहित हो गया और मन में ही विधवा या विधुर बन गया, तो उसका क्या महत्व? जैसे विवाह में, कोर्ट में या परम्परा से जो रीति–रिवाज हैं, उस रूप में कुछ न कुछ साक्षी हो, तो वह विवाह वैधानिक रूप से माना जाता है। अवैधानिक विवाह से उत्पन्न सन्तान अधिकार से

वंचित भी रह जाती है। वैसे ही अवैधानिक रूप से पाले हुए नियमों का विशिष्ट फलं कैसे हो सकता है?

बैंक में अपने रखे हुए पैसे होते हैं, परन्तु चेक पर हस्ताक्षर नहीं हों तो अपने होते हुए भी पैसे अपने नहीं हो सकते। भले ही वहाँ आप अपनी प्रामाणिकता की दुहाई भी दो, तो भी वहाँ के अधिकारी कभी भी सहमत नहीं होंगे। जो विधि–नियम होंगे, उनका पालन करना पड़ेगा।

इसी प्रकार धर्म के विषय में भी विधि, नियमों का पालन आवश्यक है। व्यवहार रूप में राजमार्ग यहीं है। अपवाद की कई स्थितियाँ बनती हैं कि बिना नियम–प्रत्याख्यान के कोई विशेष रूप से धर्म–आराधक बन जाते हैं परन्तु वैसे उदाहरण अल्प ही होते हैं। वे उदाहरण आदर्श रूप माने भी नहीं जा सकते, क्योंकि नियम लेकर भी भंग कर देने वाले होते हैं, तो जिनके नियम नहीं हैं, उन लोगों के लिए मन के विचारमात्र से नियम पालने का क्या प्रमाण हो सकता है?

❖ धर्म हृदय में होना चाहिए– फिर दिखावा करने की क्या जरूरत?

धर्म हृदय में होना चाहिए– यह एकान्त बात है। भगवान ने तो मन–वचन–काया तीनों योगों से धर्म– आराधना करने को कहा है। वचन और काया से बाह्यक्रिया होती है। बाह्यक्रिया होगी तो दिखायी देगी ही। बाह्य–क्रिया का दिखायी देना और बात है, दिखावा करना और बात है। दिखावा धर्म का क्या, किसी भी बात का अच्छा नहीं है। जो अन्तर में नहीं है और जो जिस रूप में नहीं है, उस रूप में या उससे विशेष रूप में कार्य को बताने के प्रयत्न को दिखावा कहते हैं अथवा अपने मान कषाय के पोषण के लिए की जानेवाली क्रिया के मूल में मान और माया कषाय का पोषण होने से वह वर्ज्य है।

यदि कोई भी क्रिया करेंगे तो उसके अभ्यान्तर और बाह्य दोनों पक्ष होंगे। अभ्यान्तर पक्ष मात्र चिन्तन से जाना जाता है, लेकिन बाह्य पक्ष इन्द्रिय–गम्य होता है। इन्द्रिय–गम्य होने मात्र से वह दिखावा नहीं हो जाता है। बाह्य और अभ्यान्तर पक्ष मिलकर ही क्रिया की पूर्णता होती है।

मान लो– आपके मन में अपने दामाद के प्रति बहुमान है, लेकिन जब वे घर पर आए, आप उनसे मधुर वचन नहीं बोलें, सम्मान योग्य बाह्य कार्य नहीं किया, तो आपके उस हृदयगत आदर–बहुमान का क्या मूल्य? इसी प्रकार हृदय में धर्म की भावना है, परन्तु वचन और काया में धर्म को नहीं उतारा, तो हृदयगत धर्म की भावना से क्या लाभ?

बाहर दिखनेवाली धर्मक्रिया भी मात्र दिखावे के लिए नहीं की जाती है; किन्तु भाव की सुरक्षा के लिए धर्म–आराधना की व्यवस्थित पद्धति के लिए–संघ की परम्परा को बनाये रखने के लिए की जाती है। भले ही कोई दिखावे के लिए धर्मक्रियाएँ करे। नहीं करने में हानि ज्यादा है। बाह्य–क्रियाएँ करोगे, तो एक व्यवस्था बनेगी, एक समूह बनेगा और फिर कोई नश्तर लगाने वाले चिकित्सक ज्ञानी गुरु मिलेंगे तो शल्यक्रिया कर देंगे।

धर्मक्रिया का दिखावा करना लक्ष्यसिद्धि में सहायक नहीं हो सकता– ऐसा कहकर पल्ला झटकना ठीक नहीं है।

❖ प्रतिज्ञा लेकर तोड़ने वालों की अपेक्षा प्रतिज्ञा न लेने वाला ही अच्छा है।
– यह कहना उचित है क्या?

''प्रतिज्ञा लेकर तोड़ने की अपेक्षा प्रतिज्ञा नहीं लेने वाला अच्छा है।'' यह उक्ति प्राय: ऐसे लोगों के द्वारा कही जाती है, जिन्हें प्रतिज्ञा नहीं लेना हो परन्तु यह सैद्धान्तिक बात नहीं है। जो प्रतिज्ञा लेने वाला होता है, उसके मन में प्रतिज्ञा ग्रहण करने का उत्साह ही रहता है। वह प्रतिज्ञा लेते समय ऐसा क्यों सोचे कि मेरी प्रतिज्ञा भंग हो जाएगी, तो क्या होगा? जिसे अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिये मन होता है, वह तो उत्साह के साथ आजीवन प्रतिज्ञा पालने के लिए तैयार हो जाता है।

वस्तुत: प्रतिज्ञा ग्रहण करना अर्थात् प्रत्याख्यान लेना है। जिस जीव ने पाप के पच्चक्खाण नहीं किए या अंश मात्र भी पच्चक्खाण नहीं किए, उसके अपच्चक्खाण की क्रिया लगती है परन्तु जो अंशत: भी पच्चक्खाण लेता है, उसके अपच्चक्खाणीय–क्रिया नहीं लगती है। फिर कदाचित् पच्चक्खाण भंग हो गए तो वह पडिवाई कहलाता है अर्थात् पच्चक्खाण से गिरा हुआ कहलाता है। ऐसी आराधना से पतित हुए जीव की गणना आगमों में आयी है। ऐसे पडिवाई जीव अभव्य जीव से अनन्त गुणे अधिक हैं। जिसने एक बार पच्चक्खाण ग्रहण कर लिए और फिर गिर भी गया, तो उसने कुछ रास्ता तो तय कर लिया।

जो व्यक्ति प्रतिज्ञा भंग होने के डर से या प्रत्याख्यान टूटने के डर से प्रत्याख्यान नहीं करता है, उसे तो वैसा ही समझना चाहिए, जैसे कि बच्चा गिर जाने के डर से चलता ही नहीं है। ऐसे भयवाला बच्चा कब चलना सीखेगा? प्रतिज्ञा–भंग के भय से यदि अनन्तकाल तक वह प्रत्याख्यान न करे, तो उसके धर्म–मार्ग पर चलने का अवसर अनन्तकाल तक नहीं आएगा।

कोई व्यक्ति फेल होने के डर से परीक्षा में ही नहीं बैठता है, तो उसे क्या लाभ हुआ? मान लो, कोई परीक्षा में बैठा और अनुत्तीर्ण हुआ, तो वह इस विषय का अनुत्तीर्ण

तो कहा जाएगा अर्थात् उसने अध्ययन तो किया, पर उत्तीर्ण नहीं हुआ। नहीं पढ़नेवाले की अपेक्षा उसमें अध्ययन की विशेषता है, परीक्षा में बैठने का साहस है।

इसी प्रकार जो व्यक्ति प्रत्याख्यान करता है, वह कदाचित् नहीं पाल सकता है। उसके प्रत्याख्यान भंग हो जाते हैं, तो भी उसमें प्रत्याख्या लेने का साहस है। प्रत्याख्यान पालने का कुछ अनुभव है। पर जो प्रत्याख्यान नहीं लेता है, उसके लिए क्या कहा जाए? प्रत्याख्यान भंग होने पर भव्यात्माओं को मन में पश्चाताप होता है। वह आलोचना आदि रूप में प्रायश्चित करता है।

जैसे किसी का अस्थिभंग हो गया हो, तो उसको प्लास्टर, पट्टा आदि चढ़ाकर पुन: जोड़ने का प्रयास किया जाता है। उपचारादि से अस्थि जुड़ जाती है। इसी प्रकार जिसके प्रत्याख्यान भंग हो गए हों, तो भगवान ने उसका उपाय– प्रायश्चित बताया है।

अनन्तकाल से जीव पाप का अभ्यासी रहा हुआ है। इसलिए प्रत्याख्यान लेते ही उसकी पाप–प्रवृत्ति रुक जाएगी, ऐसा नहीं है। वह पाप–प्रवृत्ति को रोकने का प्रयास करता है, परन्तु पूर्व के अभ्यास के कारण पाप–प्रवृत्ति हो जाती है। उसका पश्चाताप करके वह प्रायश्चित लेकर शुद्ध हो सकता है।

इसलिए यह कहना ठीक नहीं है कि प्रत्याख्यान नहीं लेने वाले से प्रत्याख्यान लेकर तोड़नेवाला महापापी है परन्तु, हाँ,जो दिखावे के लिये– किसी को अच्छा लगाने के लिये प्रत्याख्यान लेता है और भंग करता है, वह ठीक नहीं है। वस्तुत: उसके प्रत्याख्यान ही कहां हैं?

❖ हम जिस अधर्म–आचरण को करते ही नहीं हैं, उसके प्रत्याख्यान लेने से क्या लाभ?

मनुष्य के जीवन में सभी अधर्म–आचरणों का सेवन होना सम्भव नहीं है। जो–जो अधर्म आचरण वह करता है, वह भी कभी–कभी और कुछ घण्टों के लिए करता है। यदि अधर्म–आचरण नहीं करने से धर्म का फल होता हो, तो प्रत्येक, व्यक्ति के जीवन में अधर्म–आचरण का काल बहुत कम रहेगा। इससे अधर्माचरण का फल अल्प होना चाहिये और अधर्म के अनाचरण रूप धर्म का फल विशेष होना चाहिए परन्तु ऐसा नहीं है।

महान्, भयंकर से भयंकर हत्या करने वाला पूरी जिन्दगी भर हत्या नहीं करता। महान–बड़ा झूठ बोलने वाला महापापी रात–दिन झूठ नहीं बोलता है, तो उसके हिंसा–झूठादि के आचरण नहीं करने का समय बहुत अधिक हो जाता है। इस प्रकार उसका पाप अल्प हो जाएगा और धर्म अधिक हो जाएगा परन्तु अधर्म का अनाचरण धर्मरूप है– यह मानना ही भूल है। वास्तव में अधर्म के स्वरूप को समझकर अधर्म का त्याग करना

ही धर्मरूप है। यद्यपि व्यक्ति जिन्दगी भर तक अधर्माचरण नहीं करता है परन्तु अधर्माचरण की सम्भावनाएँ बनी रहती हैं। इसलिए उसे अविरति का पाप लगता है। त्याग कर लेने से उसके विरति हो जाती है। जिस भी अधर्माचरण का त्याग किया, उस अधर्माचरण की रोक लग जाती है। अत: अधर्माचरण, करने की सम्भावना समाप्त हो जाती है।

इसलिए जैन दृष्टि से यह कहा गया है कि अधर्म करे या न करे तो भी व्यक्ति को पाप लगता है। उस पाप की आय को रोकने के लिए त्याग अत्यन्त आवश्यक है। जैन कुल में जन्मे हुए कई बचपन से ही दुर्व्यसनों से मुक्त रहते हैं परन्तु बड़े होने के बाद संसर्गरोग से उन्हीं दुर्व्यसनों का सेवन करने लग जाते हैं। कुल संस्कार से उन्होंने दुर्व्यसनों का सेवन नहीं किया था, वे संस्कार बहुत महत्वपूर्ण थे, पर उन्हें न समझ कर संस्कारों से विहीन बन गए और दुर्व्यसनों का त्याग नहीं किया, तो वे आगे चलकर उन व्यसनों के शिकार हो गए। इसलिए दुर्व्यसनों का त्याग बहुत महत्वपूर्ण है:

जैसे कि चोर तो रोज–रोज नहीं आते हैं, कभी–कभी ही आते हैं, पर तिजोरी का ताला रोज लगा रहता है। कोई विचार करे कि जब चोर आएँगे, तब मेरी तिजोरी को ताला लगाऊँगा। तो क्या माल बचना सम्भव होगा? नहीं। पहले से ही यदि सावधानी रखी जाएगी, तो ही माल सुरक्षित बच जाएगा।

इसी प्रकार जो व्यक्ति पहले ही प्रतिज्ञा से आबद्ध होगा, वही ऐन समय पर पापाचरण से बच सकेगा।

❖ पच्चक्खाण को बन्धन मानना ठीक है क्या?

मनुष्य की इच्छा से विपरीत कोई भी कार्य बन्धन लगता है परन्तु इच्छाओं के अनुसार चलना स्वच्छन्दता है। मोक्ष–मार्ग की प्राप्ति स्वच्छन्दता से नहीं हो सकती है। जो अपनी इच्छाओं का निरोध करता है, वही मोक्ष–मार्ग प्राप्त कर सकता है। प्रत्याख्यान इच्छाओं के निरोध के लिए है। इसलिए संसारी जीव को वे बन्धनरूप लगते हैं।

परन्तु वस्तुत: ऐसा नहीं है क्योंकि बच्चा अपनी इच्छा के अनुसार बाजार में लौटना चाहता है, परन्तु अभिभावक उसे लौटने नहीं देते हैं। यदि अभिभावक उसे पकड़े हुए हैं, तो क्या यह बन्धन है? भले ही बच्चे की दृष्टि से वह बन्धन हो, परन्तु समझदार व्यक्ति की दृष्टि से वह बन्धन नहीं है: ऐसे ही जो आत्मा संसार के विषय–कषायों में फँसे हुए हैं, उन्हें उनसे बचाने के लिए प्रत्याख्यान कराये जाते हैं। वे प्रत्याख्यान उनकी आत्मा की सुरक्षा के लिए हैं परन्तु अज्ञान के कारण उन्हें वे बन्धन के रूप में लगते हैं और वे कहते भी हैं– 'महाराज ! हम बन्धन में बन्धना नहीं चाहते।' ऐसा कहने वाले

फिर विवाहादि के बन्धन में क्यों बन्धते हैं? क्योंकि वहाँ उनकी इच्छा के अनुकूल कार्य होने से, उन्हें वह बन्धनरूप नहीं लगता है। पर महाराज द्वारा कराये गए प्रत्याख्यान बन्धनरूप लगते हैं। जैसे– बालक अपने पकड़ने वाले अभिभावकों के प्रति लातों का प्रयोग करता है, काट खाता है, ऐसे ही अज्ञानी जीव प्रत्याख्यान कराने वाले के प्रति भाव रखता है।

पर जब उसे समझ आती है, तब वह स्वयं ही अपने अज्ञान पर हँसने लगता है। प्रत्याख्यान आत्मा के लिए उत्थान प्राप्त करने के लिए अवलम्बन रूप हैं। जैसे– कोई व्यक्ति ऊपर की मंजिल पर जाना चाहता हो, तो उसे जीना, सीढ़ियाँ आदि का सहारा लेना पड़ता है। इसी प्रकार से प्रत्याख्यान भी आत्मोत्थान के लिए सहायक हैं, वे बन्धन रूप नहीं हैं।

(अ) पच्चक्खाण लेने से क्या फायदा है?

पच्चक्खाण लेने से उस ओर के भाव, विचार और व्यापार बन्द हो जाने से कर्म–बन्ध रुक जाते हैं। इच्छा का निरोध करने का अभ्यास प्रारम्भ होकर तृष्णा–जय होता है। सम्यक् दर्शन की पुष्टि होती है। परिणाम–विचार शुभ होते हैं। कषाय मन्द होती है। भूतकालीन पापों का प्रायश्चित होता है और भविष्य में होने वाले पापों पर रोक लगती है। व्रतधारी धर्मी कहलाते हैं। ऐसे व्रतधारी की सद्गति होती है। इस प्रकार पच्चक्खाण करने से कई लाभ होते हैं।

(आ) क्या तीर्थंकर भगवान भी पच्चक्खाण करते हैं?

हाँ, तीर्थंकर भगवान की पच्चक्खाण करते हैं। जब तीर्थंकर दीक्षा लेते हैं, तब सिद्ध भगवन्तों को नमस्कार करके, सम्पूर्ण सावद्ययोग के त्याग का जीवन भर के लिये प्रत्याख्यान करते हैं। इसे मूलगुण प्रत्याख्यान कहते हैं। इसी प्रकार उपवास आदि उत्तरगुण प्रत्याख्यान की प्रतिज्ञा करते होंगे– इसमें संदेह नहीं, क्योंकि भगवान श्री ऋषभदेव एक वर्ष तक निराहार रहे परन्तु उसे तप नहीं माना। मात्र यही कहा जाता है वे बेले के तप में दीक्षित हुए: इसका आशय यह हुआ कि उन्होंने बेले तप की ही प्रतिज्ञा ली थी। शेष दिनों में अन्तराय के उदय से आहार नहीं मिला। जो यह कहते हैं कि भगवान ध्यान में लीन होते हैं, अत: सहज में तप हो जाता है– यह बात ठीक नहीं लगती है।

विरति के योग्य जीव तीन योग वालों में से तिर्यञ्च और मनुष्य ही होते हैं; नारक और देवों के भी तीन योग हैं, किन्तु वे विरति नहीं ले सकते– देशविरत भी नहीं हो सकते। तिर्यञ्च देशविरत हो सकते हैं और मनुष्य तो देशविरत और सर्वविरत निर्ग्रंथ भी हो सकते हैं।

पाप–प्रवृत्ति मन से भी होती है, वचन से भी और काया से भी। पाप, इन तीनों योगों से स्वयं भी किया जाता है, दूसरों से भी कराया जाता है और पाप का अनुमोदन भी किया जाता है। मन से 1 करना 2 कराना और 3 अनुमोदन करना, ये मनोयोग के तीन करण हुए। इसी प्रकार वचन के तीन करण और काया के तीन करण– इस तरह नौ प्रकार हुए। इन्हें 'नौ कोटि' कहते हैं। गृहस्थ अपनी योग्यतानुसार एक करण एक योग से लगा कर इनमें से जिस कोटि से पाप का त्याग करना चाहे, उस कोटि से कर सकता है, किन्तु साधु को तो अठारह पाप का सम्पूर्ण नौ कोटि से ही त्याग करना होता है। किसी ने किसी व्यक्ति को या स्थावरकाय के जीव को मारा, खेदित किया, अपराधी को दण्ड दिया, क्रूर प्राणी को मार डाला, झूठ बोला, बिना दी हुई वस्तु ली, विषय–सेवन किया, धन–धान्यादि का संचय किया–कराया, तो साधु ऐसे कार्यों को मन से भी 'अच्छा' नहीं मान सकते। यदि कोई मन से भी अठारह पाप या इनमें से किसी एक की अनुमोदना करे, तो उस करण–योग से उसके महाव्रत में क्षति होती है। समस्त करण–योग से सभी पाप–कृत्यों का त्याग करने पर ही मनुष्य साधु हो सकता है।

कोई पूछ सकता है कि– महाराज ! किसी के किसी कार्य की सराहना मात्र करने में कौन–सा पाप हो गया?' उन्हें सोचना चाहिए कि–चोरी, जारी या हत्या की प्रकट सराहना करने पर, सभ्य एवं सदाचारी लोग मन में समझ लेते हैं कि सराहना करने वाले की चोरी, जारी एवं हत्यादि पाप में रुचि है। संगीन चोरी के मामले में सराहना करने वाले पर भी पुलिस सन्देह करती है और उसे पकड़ कर जाँच करती है। पाप की सराहना पाप प्रिय ही करते हैं। प्राय: मन में पाप की रुचि होने पर पाप की सराहना होती है। यह पाप–रुचि पाप कर्म से आत्मा को जकड़ती है। इसीलिए परम उपकारी सर्वज्ञ भगवंत ने पाप को सर्वथा रोकने के लिए मानसिक मौन–समर्थन का भी निषेध किया है। मन, वचन और काया के अशुभ योगयुक्त आत्मा की काषायिक परिणति ही पापबन्ध की कारण है। इनकी विरति है–मुक्ति का कारण।

लौकिक पापाचार अथवा राजकीय नियम भंग का दण्ड तभी मिलता है, जब कि अपराधी का पाप खुला हो जाए और वह पकड़ में आ जाए। इसके लिये गुप्तरूप से पुलिस तथा भेद लेने वाले जासूस घूमते रहते हैं: परन्तु पाप–कर्म के लिये न तो पुलिस की आवश्यकता होती है और न न्यायाधिकारी की। आत्मा अपने अध्यवसाय से ही पापकर्मों को आकर्षित कर बंध जाती है और तद्नुसार फल भोगती है। उसका पापकर्म ही उसके बन्धन और फल–भोग का कारण बनता है।

जिस प्रकार इमली खाने से बादी होती है, भंग–मदिरादि पीने से नशा चढ़ता है और विष खाने से मृत्यु हो जाती है। बादी, नशा या विष के प्रभाव को बताने या भुगतने के लिय

पुलिस जैसी किसी तीसरी शक्ति की आवश्यकता नहीं होती, उसी प्रकार अपने पापकर्मों के बन्धन एवं फलभोग में भी किसी अन्य शक्ति की आवश्यकता नहीं होती।

भगवान ने पाप का सर्वथा नाश करके आत्मा को परम पवित्र परमात्मा बनाने का उपाय बताया है– हिंसादि पापों का मन, वचन और काया के योगों से स्वयं करने, दूसरों से करवाने और अनुमोदन करने रूप नौ कोटि से विरत होगा। विरति पाप का मार्ग ही रोक देती है। जो पापों से सर्वथा विरत होते हैं, वे महाव्रतधारी श्रमण–निर्ग्रंथ होते हैं। जिनमें इतनी शक्ति नहीं, वे देशविरत श्रावक हो जाते हैं। वे सोचते हैं कि –''जिनेश्वर भगवंत का मार्ग तो विशुद्ध है। सर्वत्यागी बनने पर ही आत्महित हो सकता है, किंतु मैं अभी इस योग्य नहीं हूँ। मुझ से मोहनीय का इतना त्याग नहीं हो सकता। मैं पामर हूँ, इसलिए अभी कमजोरों के योग्य देश–विरति ही धारण कर रहा हूँ। मेरा वह दिन धन्य होगा जब मैं सर्वविरतिरूप महाव्रतों को धारण कर के पालन करने में समर्थ हूँगा।'' गृहवास में रह कर सर्वविरति का पालन कर सकना अशक्य है। कुटुम्ब पालन, व्यापार–व्यवसाय, भोजनादि राँधने–पचाने आदि प्रपञ्च में आरम्भ–परिग्रह का सेवन एवं सावद्य प्रवृत्ति होती रहती है। इसलिए गृहस्थपन में सर्वविरति का पालन नहीं हो सकता। फिर भी गृहस्थ सावधानी रखे, तो व्यर्थ के आरम्भ–परिग्रह, हिंसा, झूठ, बेईमानी, दुराचार आदि से तो बच सकता है। पुराने माल को नया कहने, खराब को अच्छा बताने, बासी पदार्थ को गरमागरम और ताजा कहने जैसी धोखा देने की अशुभ वृत्ति से बच सकता है। गृहस्थ को भी, पाप से अधिक से अधिक बचते रहने की सतर्कता रखनी चाहिए।

कुछ लोग कहते हैं कि ''महाराज! पाप नहीं करना तो अच्छा ही है, किन्तु प्रत्याख्यान करना तो बन्धन में पड़ना है; व्रत लेने पर हम बन्धन में पड़ जाते हैं। इसलिए हम बन्धन में रहना पसन्द नहीं करते। आपका धर्म तो मुक्तिमार्ग है– बन्धनों से मुक्त करानेवाला मार्ग। फिर आप विरति और प्रत्याख्यान के बन्धनों में हमें क्यों बाँधते हैं?'' ऐसे बन्धु रक्षा के साधन एवं मुक्ति की ओर ले जाने वाले निरापद वाहन को भी बन्धनरूप मानते हैं। सज्जनों ! विरति बन्धन नहीं है। आत्मा को कर्मबन्धनों में बाँधने वाली तो अविरति है। विरति तो आत्मा को सुरक्षित रखते हुए मुक्त कराने वाली है।

आप लोग सर्दी से बचने के लिए शरीर पर अधिक वस्त्र क्यों पहनते हैं? गरम कपड़ों से शरीर को विशेष रूप से क्यों बाँधते हैं? धूप और वर्षा से बचने के लिए मकान के बन्धन में क्यों रहते हैं? सोना, चाँदी, गहने, रुपये, नोट आदि को तिजोरी के बन्धन में क्यों रखते हैं? इसलिए कि आप उन्हें बन्धन नहीं मान कर रक्षा का साधन मानते हैं। युद्ध में जाने वाले राजा और सेनापति अपने शरीर को लोहे के वजनदार कवच से बाँधते

हैं, मस्तक पर लोहे का भारी टोप रखते हैं। उसे वे बन्धनरूप नहीं मान कर आत्म–रक्षा का साधन मानते हैं। इसमें वे अपना हित देखते हैं। घृत, तेल, रोटियाँ आदि को आप डिब्बों, बर्तनों आदि के बन्धन में क्यों रखते हो? खुले क्यों नहीं रखते? इसीलिए कि खुली रखी हुई रोटियों को कुत्ता–बिल्ली आदि खा जायेंगे, चूहे खिंच जायेंगे, घृत, तेल में मक्खियाँ, चिटियाँ और चूहे आदि गिर कर खराब कर देंगे। आप उनकी रक्षा के लिए तद्नुरूप बन्धन स्वीकार करते हैं, अपने पांवों को मोजों और जूतों से बाँधना आवश्यक समझते हैं, किन्तु आत्मा की रक्षा एवं उत्थान करने वाली विरति, त्याग एवं प्रत्याख्यान को बन्धनरूप मान रहे हैं–यह विचारणा उचित नहीं है। भगवान ने तुम्हे बाँधने के लिए विरति का उपदेश नहीं दिया, मुक्त करने के लिए दिया है।

धनवान लोग अपने लिए बड़े विशाल और सुदृढ़ भवन बनाते हैं। कई विशेष रूप में भवन के आसपास परकोटा खिंचकर मजबूत फाटक लगाते हैं और उस पर बन्दूकधारी सन्तरी का पहरा रखते हैं। कितना बन्धन है उनके? क्यों? क्या वे इसे बन्धन रूप मानते हैं? नहीं, उन्हें बाहर से खतरे का भय है। उस भय से सुरक्षित रहने के लिए वे इतना प्रबन्ध करते हैं। गरीब मनुष्य के पास साधन नहीं हो, तो भी वह घासफूस की झोंपड़ी बना कर उसके भीतर रह कर अपनी, अपने बर्तनों की और ढोरों की रक्षा करेंगे। वे झोंपड़ी को बन्धन रूप नहीं, रक्षक साधन के रूप में मानेंगे। पक्षीगण भी एक–एक तिनका इक्ट्ठा करके वर्षा से बचने और अपने अंडों व बच्चों की सुरक्षा के लिए घोंसला बनाते हैं, उसे वे बन्धन रूप नहीं, परन्तु रक्षा रूप मानते हैं। तब आप समझदार कहलाने वाले मनुष्य, मुक्तिप्रदाता व्रत–प्रत्याख्यान को बन्धन रूप मानें, यह कैसी स्थिति है? लगता है कि विरति को बन्धन रूप मानने–मनवाने वाले बन्धुओं पर मोहनीय कर्म का विशेष जोर है। अच्छा हो कि वे अनन्तानुबन्धों के बन्धन से बच कर आगे बढ़ें। विरति को बन्धनरूप–हेय मानने वाले की मनोवृत्ति अनन्तानुबन्धों के दृढ़ बन्धन में डालने वाली हो जाती है। यदि ऐसी आत्मा सम्यकत्व पाई हुई हो, तो भी मिथ्यात्वाभिमुख मानी जाती है। जो सम्यकत्वी विरत नहीं होगा और विरति को बन्धन रूप हेय मानता रहेगा, उसे मिथ्यात्व में जाना ही पड़ेगा।

बहुत से मनुष्य उलटी विचारधारा के होते हैं। वे हितकारी प्रवृत्तियों में सन्देह कर के रुक जाते हैं और हानिकारक प्रवृत्तियों को सन्देह रहित होकर अपना लेते हैं। श्री सूत्रकृतांग में भगवान् ने फरमाया है कि – ''असंकियाइं संकंति, संकियाइं असंकिणो,'' जिस प्रकार मृग उस मार्ग को सुरक्षित समझ कर जाता है, जिस पर जाल बिछा हुआ है, और निरापाद मार्ग पर सन्देह करता है। इसी प्रकार विरति को बन्धन रूप मानने वाले

जीव हैं, जो विरति रूपी मुक्ति मार्ग पर तो शंका करते हैं और संसार में रुलाने वाली अविरति पर नि:शंक होकर प्रीति रखते हैं।

कुछ लोग यों भी कहते हैं कि– ''हम जैनी हैं, हम बहुत से पाप तो करते ही नहीं, फिर व्रत लेने की आवश्यकता ही क्या है? और जो कार्य परिस्थितिवश करने पड़ते हैं, उनकी रोक कैसे करें?'

उन्हें समझना चाहिये कि बहुत–सी वस्तुओं को मनुष्य जानता ही नहीं, बहुत–सी जाति–मर्यादा, कुल–मर्यादा से काम में नहीं आती, इस प्रकार उनके भोग से वंचित रहना भी ठीक है, किन्तु इससे विरति का लाभ नहीं होता। विरति का लाभ होगा– इच्छापूर्वक त्याग करने से।

किसी युवक ने लग्न किये। मन में भोग की तीव्र उमंग है, परन्तु घर पहुँचते ही ज्वर हो आया, सिर में दर्द और पेट में कटाव होता है, वह छटपटा रहा है। बीमारी में कुछ दिन पड़े रहने और भोग से वंचित रहने पर क्या वह ब्रह्मचारी माना जायगा? नहीं, क्योंकि उसने ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने की इच्छा से त्याग नहीं किया। उसके मन में से भोग रुचि मिटी नहीं, वह रोगोत्पत्ति के कारण विवश है। रोगमुक्त होते ही वह मैथुन प्रवृत्ति का इच्छुक है। अतएव विवशता या अप्राप्ति अथवा अजानकारी आदि से भोग नहीं कर सकना, विरति नहीं है। विरति है– समझ एवं इच्छापूर्वक त्याग करना।

कई मनुष्य झूठ बोलने वाले होते हैं। उनके विषय में लोगों की धारणा बन जाती है कि– 'अमुक महाशय नहीं बोले तो ही अच्छा होगा। उनका बोलना विपत्ति को आमन्त्रण देने के समान है।' वे महाशय बीमार पड़े, कंठ रोग या अन्य रोग से बोलना बन्द हो गया। अब वे झूठ नहीं बोल सकते, तो क्या वे झूठ के त्यागी एवं सत्यवादी माने जाएँगे? नहीं।

एकेन्द्रिय जीवों के तो मुँह और जीभ भी नहीं, वे बिचारे बोले ही क्यों कर? जब वे बोल ही नहीं सकते, चल–फिर नहीं सकते, तो उन्हें त्यागी माना जाए क्या? नहीं, वे अपनी विवशता के कारण वैसा कुछ कर नहीं सकते, परन्तु वे विरत या त्यागी नहीं हैं। वे त्याग और विरति में कुछ समझते ही नहीं। उन्हें अठारह ही पाप लगते हैं। जब तक पाप की चली आ रही विचारधारा या ओघसंज्ञा नहीं छूटी और समझपूर्वक त्याग का पालन नहीं किया, तब तक विरति का लाभ नहीं हो सकता। सूत्रकृतांग अ. 20 (श्रु. 2 अ. 4) में इस प्रकार का शंका का समाधान करते हुए उदाहरण दिया है कि– जिस प्रकार कोई मनुष्य, किसी दूसरे मनुष्य पर क्रुद्ध है और उसकी घात करना चाहता है, किन्तु वह व्यक्ति सदैव अंग–रक्षकों एवं दास–दासियों से घिरा रहता है, इसलिए घातक को मारने का अवसर ही नहीं मिलता और यह विवश रहता है, फिर भी वह उस व्यक्ति

का मित्र या हितैषी नहीं माना जाता। यदि उसे वर्षों तक या जीवनपर्यन्त मारने का अवसर नहीं मिले और वह अपना मन अन्य कार्यों में लगाये रखे, सोता, खाता, पीता, हँसता, खेलता और मौज करता रहे, तो भी वह उस व्यक्ति के प्रति बैरभाव एवं घातकभाव से युक्त ही रहेगा। जब तक वह समझपूर्वक उस दुर्वृत्ति का त्याग नहीं करता, तब तक वह लगातार वैरी एवं घातक रुचिवाला ही बना रहेगा।

आत्मा पूर्वभवों में विविध देशों, प्रदेशों, गतियाँ और जातियों में उत्पन्न हुआ, जाति-वैर, वंश-वैर में रहा, सिंह-व्याघ्रादि क्रूर भव पाया और जीवनभर हिंसादि पाप करता रहा। उस पाप परिणति में ही मर कर अन्योन्य भव में, उस पाप परिणति को कायम रखता हुआ जाता रहा और उस पाप के सतत् प्रवाह को प्रत्याख्यान के द्वारा काटा नहीं, तो विरति कैसे आ सकती है? पाप का काम नहीं हो सकने से विरति नहीं आ सकती, विरति आती है- पाप-प्रवाह को प्रत्याख्यान से तोड़ देने पर।

एक मनुष्य का दूसरे से विरोध था। एक बार उस विरोधी का पुत्र कहीं अकेला जा रहा था। उधर से उसका एक अन्य शत्रु आया और लड़के को मारने को तत्पर हुआ। यह देख कर पहले विरोधी की भावना में परिवर्तन आया। बालक की असहाय दशा एवं करुणाजनक पुकार ने उस पहले विरोधी का हृदय पलट दिया। उसने उस दूसरे विरोधी से बालक की रक्षा की और सकुशल घर पहुँचा दिया, साथ ही पूर्व वैर का त्याग कर दिया। इस प्रकार विरोध का ताँता टूटने पर ही हितैषीपन हो सकता है। यही बात अविरति का ताँता, विरति के द्वारा तोड़ने के विषय में है। अविरति का ताँता विरति के द्वारा तोड़ना आवश्यक है।

अशक्य अवस्था में में पाप नहीं होने से अविरति का पाप नहीं रुकता। वृद्धावस्था में वेश्यावृत्ति नहीं चलती। इससे वेश्या ब्रह्मचारिणी नहीं हो सकती। यह तो शक्ति, योग्यता एवं अनुकूलतादि होने न होने की स्थिति है। शक्ति आदि होने पर पाप किया, नहीं होने पर विवश रहा, इससे विरति का लाभ नहीं मिलता। इसलिए रुचिपूर्वक विरति स्वीकार करनी चाहिए। यदि सर्वविरति की अपनी योग्यता नहीं हो, तो देश-विरति अंगीकार करके पालन करनी चाहिए।

कोई कहते हैं- 'साधुपन अच्छा नहीं, श्रावकपन अच्छा नहीं'- इस प्रकार बोलने वाले जैनी नामधारी वैसे हैं, जैसी वह कुलांगना नारी, जो कहती है कि- 'वेश्यापन अच्छा है, सतीपन खराब है।' ऐसे व्यक्ति जैन कुलोत्पन्न हों, तो भी जैनी नहीं माने जा सकते।

व्रत ग्रहण करने के बाद उसका पालन भी पूरी तरह करना चाहिए। यदि व्रत पालन में उपेक्षा की, बेपरवाही की, तो व्रत में दोष लगता है। उपेक्षापूर्वक पालन में बेगार जैसी

दशा होती है और इससे व्रत का यथार्थ फल नहीं होता। पुलिस कर्मचारी, जहाँ दो-तीन या चार मार्ग मिलते हैं, वहाँ खड़ा रहकर मोटर, तांगा आदि वाहनों के गमनागमन पर नियंत्रण रखता है। वह अपने हाथ के संकेत से वाहनों को चलाता और रोकता है। यदि वह बेपरवाही कर दे, खेल तमाशा, देखने लगे, या सो जाए, तो क्या परिणाम है? कितनी दुर्घटना हो जाएँ? फिर उसकी वह छोटी सी नौकरी रहे? इतना ही नहीं, उसे उसकी बेपरवाही का दुःखद परिणाम भी भोगना पड़े। उसकी नौकरी केवल वर्दी पहनने मात्र की नहीं, परंतु कर्त्तव्य पालन करने की है। इसी प्रकार व्रत लेने और वेश परिवर्तन करने मात्र से ही व्रत का फल नहीं होता। व्रतों का विशुद्ध रीति से पालन करने से ही वास्तविक लाभ होता है।

❖ **जिसको ज्ञान होता है उसी को पाप लगता है? जिसको ज्ञान ही नहीं, उनको पाप कैसे लगेगा?**

1. खून की सजा फाँसी, इस प्रकार जिसे ज्ञान नहीं है वह व्यक्ति खून करे क्या उसे फाँसी नहीं होती? अवश्य होती है।
2. जिस प्रकार अग्नि जलाती है किन्तु यदि किसी व्यक्ति को इसका ज्ञान नहीं है और वह व्यक्ति यदि अग्नि पर पैर रखे तो क्या नहीं जलेगा? अवश्य जलेगा।
3. विष प्राणघातक है तो क्या इसको खाने वाले जिसको ज्ञान नहीं है वह नहीं मरेगा? अवश्य मरेगा। वैसे ही अज्ञानी को भी पाप लगेगा। अपेक्षा विशेष से अज्ञानी को अधिक पाप लगता है। जैसे अग्नि की जलाने की शक्ति नहीं जानने वाला अग्नि को उठाने पर असावधानी के कारण ज्यादा जलता है और उसे जानने वाला अग्नि को सावधानी से उठाने से कम जलता है। (रोगी दवाई के गुण-दोष को जाने बिना भी दवाई लेता है और उसे फायदा दिखाई देता है। इस प्रकार से प्रतिक्रमण स्वाध्याय आदि का अर्थ न भी समझे तो भी धर्म आराधना करने से लाभ ही होता है)।

किस नियम का कितना फल

1. **अष्ट प्रहरी पौषध का फलः** 27 सौ अरब 77 करोड़ 77 लाख, 77 हजार 777 पल्योयम से अधिक नारकी का आयुष्य क्षय हो।
2. **पौषध सहित पौरुषी का फलः** 346 करोड़ 22,22,222 पल्योपम से अधिक नरक का आयुष्य क्षय हो।
3. **संवर का फलः** 46,29,61 हजार 900 पल्लोपम के नरक का आयुष्य क्षय हो।

4. **सामायिक का फलः** 62,59,25,925 पल्योपम अधिक नरक का आयुष्य क्षय हो।
5. **एक-एक घड़ी का पचखाण का फलः** 2,53,408 पल्योपम अधिक नरक का आयुष्य क्षय हो।
6. **एक नवकार मंत्र पढ़ने का फलः** 19,63,263 पल्योपम से अधिक नरक का आयुष्य क्षय हो।
7. **आनुपूर्वी पढ़ने का फलः** 500 सागरोपम अधिक नरक का आयुष्य क्षय हो।
8. **नवकारसी का फलः** 100 वर्ष नरक का आयुष्य क्षय हो।
9. **पौरुषी का फलः** 1000 वर्ष नरक का आयुष्य क्षय हो।
10. **दो पौरुषी का फलः** 10,000 वर्ष नरक का आयुष्य क्षय हो।
11. **एकासना का फलः** 100,000 वर्ष नरक का आयुष्य क्षय हो।
12. **एकलठाणा का फलः** 1 करोड़ वर्ष नरक का आयुष्य क्षय हो।
13. **नीवि का फलः** 10 करोड़ वर्ष नरक का आयुष्य क्षय हो।
14. **आयम्बिल का फलः** 1 अरब वर्ष नरक का आयुष्य क्षय हो।
15. **उपवास का फलः** 1 हजार अरब करोड़ वर्ष नरक का आयुष्य क्षय हो।
16. **अभिग्रह का फलः** 10 हजार करोड़ वर्ष नरक का आयुष्य क्षय हो।

उपवास का फल

1. **एक उपवास** से 1 उपवास का लाभ।
2. **बेला** करने से 5 उपवास का लाभ।
3. **तेला** करने से 25 उपवास का लाभ।
4. **चोला** करने से 125 उपवास का लाभ।
5. **पचोला** करने से 625 उपवास का लाभ।
6. **छोला** करने से 3,125 उपवास का लाभ।
7. **सतोला** करने से 15,625 उपवास का लाभ।
8. **अठाई** करने से 78,125 उपवास का लाभ।
9. **नौ** करने से 3,90,625 उपवास का लाभ।
10. **दस** करने से 19,53,125 उपवास का लाभ।
11. **ग्यारह** करने से 97,65,625 उपवास का लाभ।

12. **बारह** करने से 4,88,28,125 उपवास का लाभ।
13. **तेरह** करने से 24,41,40,625 उपवास का लाभ।
14. **चौदह** करने से 1,22,07,03,125 उपवास का लाभ।
15. **पन्द्रह** करने से 6,10,35,15,625 उपवास का लाभ।
16. **सोलह** का तप करने से 3 हजार 51 करोड़, 75 लाख 70 हजार 125 उपवास का लाभ।
17. **सत्रह** का तप करने से 15 हजार 220 करोड़ 70 लाख 90 हजार 625 उपवास का लाभ।
18. **अठारह** का तप करने से 76 हजार 293 करोड़ लाख 53 हजार 125 उपवास का लाभ।
19. **उन्नीस उपवास** का 3 लाख 81 हजार 496 करोड़ 72 लाख 65 हजार 625 उपवास का लाभ।
20. **बीस उपवास** का 19 लाख 7 हजार 348 करोड़ 63 लाख 28 हजार 125 उपवास का लाभ।
21. **इक्कीस उपवास** का 95 लाख 36 हजार 743 करोड़, 16 लाख 40 हजार 625 उपवास का लाभ।
22. **बाईस उपवास** का 4 करोड़ 76 लाख 83 हजार 715 करोड़ 82 लाख 3 हजार 125 उपवास का लाभ।
23. **तेईस उपवास** का 23 करोड़ 84 लाख 18 हजार 579 10 लाख 15 हजार 625 उपवास का फल।
24. **चौबीस उपवास** का 119 करोड़ 20 लाख 92 हजार 895 करोड़ 50 लाख 78 हजार 125 उपवास का फल।
25. **पच्चीस उपवास** का 596 करोड़ 4 लाख 64 हजार 477 करोड़ 53 लाख 90 हजार 625उपवास का फल।
26. **छब्बीस उपवास** का 2,970 करोड़ 23 लाख 22 हजार 378 करोड़ 69 लाख 53 हजार 125 उपवास का फल।
27. **सत्ताईस उपवास** का 14,901 करोड़ 16 लाख 1 हजार 938 करोड़ 47 लाख 35 हजार 625 उपवास का फल।

28. **अट्ठाईस उपवास** का 74505 करोड़ 80 लाख 59 हजार 692 करोड़ 38 लाख 28 हजार 125 उपवास का फल।
29. **उनतीस उपवास** का 3,72,529 करोड़ 2 लाख 98 हजार 461 करोड़ 91 लाख 40 हजार 625 उपवास का फल।
30. **तीस उपवास** का 1862,645 करोड़ 14 लाख 92 हजार 309 करोड़ 57 लाख 3 हजार 125 उपवास का फल।
31. **एक मासखमण** का 93,13,225 करोड़ 74 लाख 61 हजार 547 करोड़ 85 लाख 15 हजार 625 उपवास का फल।

    इस प्रकार आगे-आगे एक-एक बढ़ाने से पहले की तपस्या से 5 गुना अधिक फल होता है। पौरसी करें तो दुगुना, दो पौरसी करे तो तिगुना फल होता है।

❖ मोक्ष मार्ग में ज्ञान के साथ क्रिया की आवश्यकता कैसे? सिद्ध कीजिये।

दूध का स्वभाव गुणकारक है ऐसा बोध है और दूध पीने वाले को अवश्य लाभ होता है यह ज्ञान होने पर भी दूध की जगह चूने का पानी पीने में आवे तो क्या फायदा होगा? नहीं होगा।

दूध पीने योग्य है और चूने का पानी पीने योग्य नहीं है, इतना ज्ञान अवश्य होना चाहिये। यह ज्ञान स्वयं को न हो तो दूसरों के ज्ञान की सहायता लेना श्रद्धा है।

इस बात का ध्यान करके कि एक-दूसरे के ज्ञान का फायदा एक-दूसरे को मिल सकता, किन्तु एक-दूसरे की क्रिया का फायदा एक-दूसरे को नहीं हो सकता। क्रिया तो स्वयं को ही करनी पड़ेगी क्योंकि करनी ही पार उतारनी जो करेगा वही पायेगा।

जैसे माता-पिता को दूध सम्बन्धी ज्ञान है अत: उस ज्ञान का फायदा बालक को होता है, परन्तु माता-पिता के दूध पी लेने से बालक की भूख मिटेगी? नहीं। वैसे ही किसी के सर्वज्ञ बनने से हम सर्वज्ञ नहीं बन सकते, उन ज्ञानी के ज्ञान का फायदा हम उठा सकते हैं।

क्रिया करने में ज्ञान मार्गदर्शक बनता है। इस प्रकार ज्ञान और क्रिया दोनों परस्पर संकलित हैं।

परन्तु क्रिया (आचरण) थोड़े ही व्यक्ति कर पाते हैं जिस प्रकार से बहुत व्यक्ति जानते हैं कि व्यसन खराब है किन्तु व्यसन छोड़ने वाले कितने हैं?

संसार असार है, मिथ्यात्व भयंकर है, कषाय संसार को बढ़ाता है, अविरति आश्रव का कारण है, इत्यादि जानने की दृष्टि से बहुत लोग जानते हैं परन्तु उस ज्ञान के अनुरूप आचरण कितनों का?...

करोड़पति किसे कहते हैं यह जानने वाले बहुत मिलेंगे किन्तु करोड़पति कितने?

करोड़ के ज्ञान मात्र से दरिद्रता दूर नहीं होती। इस प्रकार मिथ्यात्व आदि जाने परन्तु उसका त्याग न करें तो क्या फायदा?

सत्य को समझने पर भी मोह के कारण असत्य को छोड़ने वाले थोड़े ही निकलते हैं। इस प्रकार से ज्ञान के साथ क्रिया भी जरूरी है, इसी कारण पंचपरमेष्ठी में ज्ञान का ही संग्रह नहीं किया है किन्तु ज्ञान को आचरण में रखने वाले को स्थान दिया है।

आचरण रहित अवधि ज्ञान के धारक देवों का भी पंच परमेष्ठी में स्थान नहीं है। अव्रतीदशा में चक्रवर्ती की हजारों देवता सेवा करते हैं, किन्तु वंदन नहीं करते। तीर्थंकर भगवान को व्रत (चारित्र)लेने पर ही मन:पर्याय ज्ञान होता है। दर्पण मुख पे रही गंदगी का ज्ञान दे (बता) सकता है किन्तु साफ नहीं करता। मुख पे रही गंदगी तो क्रिया से ही साफ होगी। इन सब बातों से भलीभाँति समझ सकते हैं कि मण भर ज्ञान से तो कण भर आचरण अच्छा है।

❖ आयम्बिल के विषय में जानकारी दीजिए?

1. अणुत्तरोववाई में धन्ना मुनि ने दीक्षा लेकर जीवन पर्यन्त बेले-2 पारणा किया और पारणें में आयम्बिल किया (उसमें-उज्झित आहार लेते थे) उससे वे 14000 सतों में सर्वश्रेष्ठ कहलाये और वे सर्वार्थ सिद्ध विमान में उत्पन्न हुए (पांचवे अनुत्तर विमान में)।
2. 60 हजार वर्ष तक निरन्तर आयम्बिल करके सुन्दरी ने भरत महराजा से दीक्षा की अनुमति प्राप्त की।
3. 'भगवती सूत्र' में आता है कि गौशालक को आयम्बिल जैसे तप से तेजो लेश्या उत्पन्न हुई थी।
4. 'अन्तगड़ सूत्र' में श्रेणिक की रानियों ने दीक्षा लेकर तपस्या की चार परिपाटी की, उसमें चौथी परिपाटी में पारणे में आयम्बिल तप करते थे।
5. महासेन कृष्णा ने 14 वर्ष तक वर्धमान आयम्बिल तप की आराधना की। उस तप से 5050 आयम्बिल और 100 उपवास आते हैं।
6. ज्ञातासूत्र में द्रोपदी सती ने 6 माह तक आयम्बिल किये उससे शील का संकट दूर हुआ।

7. भगवती सूत्र में तामली तापस ने 60 हजार वर्ष तक एक ही प्रकार के अनाज से आयम्बिल जैसा तप किया। उससे वे परित्त संसारी बने। आगामी भव में वे मोक्ष में जायेंगे।
8. श्रीपाल राजा ने आयम्बिल ओली की आराधना की उससे उनका भयंकर कुष्ठ रोग दूर हुआ।
9. द्वारिका नगरी में जब तक आयम्बिल चलते रहे तब तक उस नगरी का नाश नहीं हुआ।
10. चन्दनबाला ने उड़द के बाकुले से महावीर भगवान का अभिग्रह पूर्ण किया।
11. अंबड़ संन्यासी ने आयम्बिल करके अवधिज्ञान, वैक्रिय लब्धि और वीर्य लब्धि प्राप्त की थी।

इस प्रकार आयम्बिल तप से द्रव्य और भाव दोनों प्रकार के लाभ होते हैं, इसलिये भव्य आत्माओं को आयम्बिल तप की आराधना करनी चाहिये।

❖ पच्चक्खाणों का विधान (अन्य मान्यता):

1 कोई पुरुष 1 नवकारसी करे तो 100 वर्ष के नरक के अशुभ बंधन तोड़े।
कोई पुरुष1 पौरसी करे तो 1000 वर्ष के नरक के अशुभ बंधन तोड़े।
कोई पुरुष डेढ़ पौरसी करे तो 10 हजार वर्ष के नरक के अशुभ बंधन तोड़े।
कोई पुरुष 2 पौरसी करे तो 1 लाख वर्ष के नरक के अशुभ बंधन तोड़े।
कोई पुरुष एकासन करे तो 10 लाख वर्ष के नरक के अशुभ बंधन तोड़े।
कोई पुरुष एकलठाणा करे तो 1 करोड़ वर्ष के नरक के अशुभ बंधन तोड़े।
कोई पुरुष नीवी तप करे तो 10 करोड़ वर्ष के नरक के अशुभ बंधन तोड़े।
कोई पुरुष उपवास करे तो 10 अरब वर्ष के नरक के अशुभ बंधन तोड़े।
कोई पुरुष अभिग्रह तप करे तो 1 खरब वर्ष के नरक के अशुभ बंधन तोड़े।
शुद्ध मन से 1 नमस्कार मंत्र का जाप करे तो 1963367 पल्योपम नरक का बंधन तोड़े।
शुद्ध मन से घड़ी 2 के पच्चक्खाण करे तो 20053409 पल्योपम से कुछ अधिक नरक का बंधन तोड़े।
शुद्ध मन से 1 घड़ी का संवर करे तो 462912967 पल्योपम से कुछ अधिक नरक का बंधन तोड़ें।

धोवनपानी

❖ राख का महत्व:

1. अनाज में राख डालकर रखने से अनाज खराब नहीं होता।
2. बाबा–फकीर शरीर पर भभूति लगाते हैं जिससे जीव–जंतु शरीर को नुकसान नहीं पहुँचाते हैं।
3. कीड़ों आदि का उपद्रव होने पर राख डालते हैं, तो वे चले जाते हैं।
4. मक्खी आदि तेल, घी, दूध में गिर जाए तो निकालकर, राख में रखने पर मरने से शीघ्र बच जाती हैं।
5. आयुर्वेदिक दवाओं में अधिकांश दवाओं में 90% तक राख का प्रयोग होता है।
6. राख से कई लोग दातून भी करते हैं।
7. गांवों में ''होलिका दहन'' की राख संभालकर रखी जाती है।
''राख का अन्य नाम रक्षा भी है।''

❖ ''जल ही जीवन है''

जल के कारण घटित घटनायें:

1. नंद मणियार बावड़ी में आसक्त बनकर मेंढक बना।
2. एवंता मुनिवर ने पानी में नाव तैराई।
3. दुर्योधन के भ्रमवश पानी में गिर पड़े तो द्रोपदी ने कहा– अंधे के पुत्र अंधे, जिसके कारण महाभारत हो गया।
4. भगवान पार्श्वनाथ पर वर्षा हो रही थी उससे धरणेन्द्र देव ने बचाया।
5. पानी के अभाव में अंबड़ ने संथारा किया।
6. शंख राजा ने द्राक्षा का धोवन बहराकर तीर्थंकर गोत्र बाँधा।
7. सुबुद्धि प्रधान ने ''गटर'' के पानी की प्रक्रिया कर मधुर जल जितशत्रु राजा को पिलाया जिससे राजा जिनधर्म का अनुयायी बना।
8. धर्मदास जी म.सा. को संथारे के पूर्व पीने का पानी नहीं मिला।
9. अण्णिकाचार्य को नदी में केवल्य ज्ञान हुआ।

❖ जीव कितने?

पानी की एक बूँद में भगवान ने असंख्य जीव बताये हैं। यदि 1 बूँद में से 1–1 जीव निकालकर सरसों के दाने जितना बड़ा करें तो 1 लाख योजन के जंबू द्वीप में नहीं समायें।

कैप्टन स्कोर्स बी ने पानी की एक बूंद में चलते–फिरते (त्रस) 36450 जीव देखें।

रुकिये व पढिये
पानी का दुरुपयोग रोकिये

एक बुन्द पानी का चित्र

सिद्ध पदार्थ विज्ञान नाम का ग्रन्थ इलाहाबाद गवर्नमेन्ट प्रेस में छपा हुआ है, केप्टन स्कोर्सबी ने दुरबीन के द्वारा एक जल बिन्दुमें 36450 चलते फिरते जीव देखें। इसलिए बिना छाने और जरुरत से ज्यादा पानी काम में न लेवे।

कृपया इसका ज्यादा से ज्यादा प्रचार करे व इसे चिपका कर रखे।

पन्नवणा सूत्र के पद 3 में ''दिशाणुवाय'' के थोकड़े में भगवान ने पानी में 7 प्रकार के जीव नियम बताये हैं।

पानी के, वनस्पति के, समुच्चय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरेन्द्रिय, ति.पं–

पानी में जीव या

पानी ही जीव

पानी ही जीव है और उसमें जो जीव हमें प्रत्यक्ष देखते हैं वह तो त्रस जीव हैं। जैसे मनुष्य एक जीव है पर उसके शरीर में कीड़े पड़ जाएँ तो वे मनुष्य के जीव से अलग जीव हैं।

❖ कैसे मानें पानी जीव है?

1. द्रहों में पानी अपने आप (स्वत:) उत्पन्न होता है कहीं से आता नहीं।
2. जिस स्थान पर पानी रहा हो, वहाँ ठंड के दिनों में गीलापन आता है।

कच्चे पानी में जीव हैं तो हमें दिखते क्यों नहीं?

पानी से संबंधित 3 प्रकार के जीव हैं।

1. जलचर : ये तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय हैं, जैसे मछली, कछुआ आदि।
2. जलगत : ये बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चउरेन्द्रिय जीव हैं, जैसे पोरे (जीवाणी) गिंडोले आदि।
3. जलमय : ये वे जीव हैं जो एकेन्द्रिय हैं। ये पानी ही जीव है। ये अपकाय कहलाते हैं।

ऐसे पानी के जीवों की रक्षा करना चाहिये।

❖ यदि कच्चा पानी न पिएँ तो क्या लाभ?

1. भगवान की आज्ञा पालन होगा?
2. कच्चे पानी की क्रिया नहीं लगेगी
3. भोजन करते समय संत–सति पधारें तो असुझता नहीं होगा
4. संत–सति को कभी भी आपके यहाँ पानी उपलब्ध रहेगा, जिससे सुपात्रदान का लाभ।
5. कच्चे पानी को नहीं पीने वाला पानी साथ में रखेगा जिससे रास्ते में संत–सति का लाभ मिल सकता है।
6. पानी साथ में रखने पर बस आदि में कोई घबरा जावे या कोई बालक आदि को प्यास लगी हो तो वह लाभ प्राप्त होगा।
7. कोई व्यक्ति कहता है ''साले को कच्चा चबा जाऊँगा'' इस वाक्य में ऐसा लगता है कि कच्चा खाने में क्रूरता अधिक है। पक्का खाने में कम या नहीं।

अपने हक से ज्यादा पानी लेना चोरी है।
– महात्मा गांधी

❖ धोवन पानी या किसी भी प्रकार के पानी को कहाँ एवं कैसे रखना?

- खुले बर्तन स्थान पर नहीं रखना
- फ्रीज में नहीं रखना
- कच्चे पानी के नजदीक या साथ नहीं रखना।
- बिना ढँका नहीं रखना।

बनाने की विधि

प्र.1. धोवन पानी बनाया जाता है या रखा जाता है?

धोवन पानी तो हर घर में सहज में हो जाता है घर में बर्तन राख से ही माँजे जाते हैं। वह पानी रख लिया जाता है। इस प्रकार बनाया नहीं जाता – पर सहज में हो जाता है उसे संभालकर विवेक से रख लिया जाता है।

कभी–कभी गृहस्थ अपने लिए बनाता है, पर ~~संत–सतियों के लिए बनाते थे~~ वह संत–सतियों के लिए भी उपयोग में लाया जा सकता है।

प्र.2. आजकल तो ''विम पॉवडर या सर्फ'' से मांजते हैं फिर संत–सति के आने पर उनके निमित्त बनाना पड़ेगा?

कई गृहस्थ लोग अपने परेंडे (पानी रखने का स्थान) के बर्तन राख से ही मांजते हैं। वह पानी कल्पनीय है। यदि ऐसी स्थिति हो कि हमारे यहाँ पानी नहीं है तो आसपास शाकाहारी घरों में (दलाली करके) उपलब्ध हो। ऐसा प्रयास करना चाहिये।

प्र.3. आजकल राख भी नहीं मिलती है। क्या करें?

घर में कोई बीमार हो डॉक्टर कोई चूर्ण बतावे तो वह यदि बंबई या अमेरिका में मिले तो आप उसे प्राप्त कर लेते हो, तो क्या आप प्रयास करें तो आपको राख प्राप्त नहीं होगी क्या?

फिर आपको, राख निम्न स्थलों से प्राप्त हो सकती है:

1. गाँवों से
2. दाल बाँटी आदि में कंडों का प्रयोग हो वहाँ से
3. ''होलिका दहन'' के समय वहाँ से।
4. श्री महेश भाई शांतिलाल पुनातर श्रद्धा टूल्स सेन्टर प्लॉट नं. 443 जीआईडीसी शंकर टेकरी उद्योगनगर एसोसिएशन ऑफिस के सामने जामनगर 361004 भुज
5. जैन जनरल स्टोर्स
   बिस्टान नाका, खरगोन (म. प्र).

प्र.4. धोवन पानी पीने से पथरी की बीमारी हो सकती है क्या?

इतने संत–सति धोवन पीते हैं आज तक सुना नहीं कि किसी संत को पथरी हुई हो। वर्तमान में दुनिया में सैकड़ों डाक्टर हैं पथरी के एवं सैकडों मरीज हैं पथरी के।

पथरी के उन मरीजों से जाकर पूछें कि क्या आपने धोवन पानी पिया जिससे पथरी हो गई है?

तो शायद आपको एक भी ऐसा नहीं मिलेगा जो कहे कि मुझे धोवन पानी से पथरी हुई है।

सोचो राख या पॉवडर

	पॉवडर से मांजने से	राख से मांजने पर
1.	जहरीला पानी नाली में जाने से जीव हिंसा होगी।	हिंसा की मात्रा घटेगी।
2.	सर्फ से/पॉवडर से मांजने पर पानी अधिक लगता है	इसमें पानी कम लगता है या पहले के लोग राख से सूखे बर्तन ही मांज लिया करते थे।
3.	पॉवडर का धोया पानी अन्य कामों में नहीं आ सकता है।	राख का धोया पानी अन्य कामों में आ सकता है।
4.	पावडर का धोया पानी यदि पशु–पक्षी पिएँ तो उन्हें नुकसान हो सकता है।	इसमें कोई नुकसान नहीं होता।
5.	सर्फ/पॉवडर से मांजने वाले को एलर्जी/इन्फेक्शन होता है।	राख वाले को एलर्जी नहीं, इन्फेक्शन नहीं बल्कि कोई शारीरिक रोग हो तो दूर हो जाए।
6.	संत–सति के काम का नहीं पॉवडर पानी	संत–सति के काम का राख का पानी।
7.	पॉवडर लाने में धन व्यय होता है।	राख फ्री में उपलब्ध होती है।
8.	संत–सति को बहराने का लाभ नहीं मिलेगा।	संत–सति को बहराने का लाभ मिलेगा।
9.	इससे धोने पर कर्म बंध अधिक।	इससे कर्म बंध के प्रतिशत में कमी।
10.	पानी आंगन में फैल जावे तो फिसलने की संभावना।	इस पानी में फिसलने की संभावनाएँ बहुत कम हो जाती हैं।
11.	बर्तनों को बार–बार धोने पर भी पावडर का असर रह जाता है जो खाने–पीने के साथ पेट में जाता है तो कई बीमारिया पैदा हो जाती हैं।	राख पेट में जाने में एसीडीटी अम्लीयता कम हो जाती है।

12.	रोग प्रतिरोधक क्षमता नहीं।	रोग प्रतिरोधक क्षमता होती है।
13.	विम खरीदने के लिए धन चाहिये।	राख स्वतः बिना मूल्य प्राप्त होती है।

धोवन पानी घृणा योग्य नहीं

प्र.1. धोवन पानी मैला सुगला गंदा भाता नहीं?

होटल में आप जाते हैं तो वहाँ नौकर होते हैं जिनके हाथ में 4–6 ग्लास होते हैं। उनका शरीर पसीने से तरबतर हो रहा है। पानी की टंकी जिसे कभी–कभी साफ किया जाता होगा। उसमें वह एक साथ यह ग्लास डालकर पानी भरता है। वह पानी धोवन पानी से भी अधिक गंदा एवं खराब होता है। उससे तो धोवन पानी कहीं ज्यादा अच्छा होता है।

पशु–पक्षी हौज का पानी पीते हैं वो कैसा होता है? विचार करें।

नोट: फिटकरी (निर्मली) घुमाकर पूर्ण निर्मल करके भी उपयोग किया जा सकता है।

- पू श्री पंकज मुनिजी म.सा. के गृहपक्षीय घर में धोवन पानी दिन भर में आने वाले सभी मेहमान ग्राहक आदि को पिलाया जाता है।

  ऐसे कई परिवार हैं, जहाँ पूरा पानी ही धोवन कर लिया जाता है।
- पानी हमारी जबान पर रहता कितने समय? थोड़े स्वाद के लिए अहा! कितने जीवों की हिंसा। स्वाद जीभ में है पेट में नहीं। जीव पर तो बहुत ही अल्प समय रहता है पेट में अधिक समय।
- नरक में कम से कम 10,000 वर्ष पानी की 1 बूंद पीने को नहीं मिलती। ऐसी नरक अनंत बार भोगी है। वहाँ परवश से पानी नहीं मिला, उसे सहन किया। यहाँ इच्छापूर्वक कच्चा पानी त्याग कर अनंत कर्मों की निर्जरा करो।

❖ जीवरहित पानी में पुन: जीवोत्पत्ति कब?

गर्म पानी जो तीन उकाले वाला हो उसकी मर्यादा ऐसी जानी है।

1. वर्षाकाल में : 3 प्रहर (लगभग 9 घंटा)
2. ठंड में : 4 प्रहर (लगभग 12 घंटा)
3. गर्मी में : 5 प्रहर (लगभग 15 घंटा)

धोवन पानी में राख के कण समाहित रहते हैं इसलिए इसकी मर्यादा अधिक समय हो सकती हैं, फिर भी व्यवहार की शुद्धि हेतुः

सुबह का शाम तक चलाना चाहिये रात्रि में पीने के लिए दोपहर शाम को किया हुआ काम में लेना चाहिये।

धोवन पानी होने के बाद कम से कम 24 मिनट बाद ही उपयोग करना योग्य है।

धोवन पानी को मटकी में रखने वालों को नित्य मटकी मटकों को खाली करके उल्टा रखकर सुखाना चाहिये।

कच्चा पानी अशुद्ध होता है एवं संक्रामक रोगों का जन्मदाता होता है इसलिए आजकल

- मिनरल वाटर पी रहे हैं।
- फिल्टर का पानी पी रहे हैं।
- उबला पानी पी रहे हैं।
- पानी के पाउच पी रहे हैं।

सब जान रहे हैं, पैसे खर्च कर रहे हैं पर बिना खर्च का सर्वश्रेष्ठ पानी है।

धोवन पानी

इसे अल्काइन पानी के नाम से जाना जा रहा है।

अल्काइन पानी क्या है

- किसी पदार्थ की अम्लता नापने का पैमाना pH वैल्यू है।

1. यदि पानी की pH वैल्यू 7 हो तो वह न्यूट्रल है।
2. यदि पानी की pH वैल्यू 7 से ऊपर है तो वह अल्काइन है।
3. यदि पानी की pH वैल्यू 7 से कम है तो वह एसीडिक (अम्लीय) पानी है।

आयुर्वेद में राख को एन्टीसेप्टिक बताया गया है।

पानी को अल्काइन बनाने के लिए हजारों रुपये की मशीन लानी पड़ती है जबकि राख मिला पानी अल्काइन हो जाता है।

राख मिले पानी की pH वैल्यू जब भी टेस्ट किया गया 7 से ऊपर ही मिली।

वैज्ञानिक प्रमाण आधार नं. १

गवर्मेन्ट ऑफ गुजरात की डीस्ट्रीक्ट लेबोरेटरी (जल भवन) जामनगर में करवाये गये धोवन पानी के लेबोरेटरी टेस्टींग के सर्टिफीकेट बताते है कि Opinion for Potability : FIT अर्थात् यह पानी पीने के योग्य है। रिपोर्ट में **Tap Water Ash Treated** लिखा हुआ है, इसका मतलब राख का धोवन पानी। जो प्रस्तुत सर्टिफीकेट में क्रमनं.५ में पी.एच. वेल्यु ८.४७ दिखाया गया है।

Phone No. : - (0288)2550253 e-mail :- distlabjam@gmail.com / dist_jam@bsnl.in

DISTRICT LABORATORY
Gujarat Water Supply &Sewerage Board
JAMNAGAR

REPORT ON SHORT CHEMICAL EXAMINATION OF DRINKING WATER

Senders Ref.No : Nil

Name & Address:-
Shree Prafulbhai Dedhiya
Ranjitnagar
JAMNAGAR

Date : 13-04-11
Date of Collection. 13-04-11
Date of Arrival : 13-04-11
Lab.Ref.No. JCW : 24

Source of Sample: Municipal Tap water(Ash treated) Collected by : Sender

L. C. No. : 41012000
Village : JAMNAGAR Taluka : JAMNAGAR District : JAMNAGAR

	CHARACTERISTIC	IS-10500:1991(F.R)		Analytical
		Desirable	Permissible	Value
1	Colour Hazen Units	5	25	Colourless
2	Odour	U.O.	U.O.	Unobjectionable
3	Turbidity NTU	5	10	5
4	Dissolved Solids mg/l	500	2000	306
5	pH	6.5 to 8.5	--	8.47
6	Total Hardness (as CaCO3) mg/l	300	600	64
7	Calcium (as Ca) mg/l	75	200	13
8	Magnessium (as Mg) mg/l	30	100	8
9	Chlorides (as Cl) mg/l	250	1000	100
10	Sulphates (as SO4) mg/l	200	400	12
11	Nitrates (as NO3) mg/l	45	--	1.67
12	Fluorides (as F) mg/l	1.0	1.5	0.10
13	Alkalinity (as CaCO3) mg/l	200	600	124

OPINION for Potability ---> FIT

N.B Exececssive Turbidity, if any, may be removed before use.

DLJ/ 393 /2011 Date: 19 - 4 - 2011
DISTRICT LABORATORY,
"Jal Bhavan", Saru Section Road,
JAMNAGAR - 361002

Mehta R.A
LABORATORY ASSISTANT

वैज्ञानिक प्रमाण आधार नं. २

इस्कोन, चौपाटी-मुंबई : श्री मदन गोपाल दासजी द्वारा मुंबई के प्रख्यात सरकारी सबसे बडे के.इ.एम. (K.E.M.) हॉस्पीटल के माइक्रोबायोलॉजी के बेक्टेरीओलॉजीकल विभाग में दिनांक १७-४-२०१० को अलग-अलग पानी टेस्टींग के लिए दिए थे। वह सर्टिफीकेट निम्न है :-

Seth GS Medical College & KEM Hospital
Department of Microbiology
Clinical Bacteriological division

17.4.2010

Blinded testing of water samples received from ISKCON Chowpatty, Mumbai.

Sample 1: coliform bacilli grown in culture

Sample 2: No coliform bacilli grown in culture

Uncoding after testing –

Sample 1 - well water

Sample 2 - well water with cowdung ash

Conclusion: Well water is not suitable for drinking. It has to be treated. Cowdung ash has to be further tested for its antibacterial properties.

Dr Gita Nataraj
Professor and Incharge

पानी टेस्टींग के नमूने नमूना नं. १ : अनुपयोगी (बिन वपरासी) कूएँ का पानी
नमूना नं. २ : अनुपयोगी (बिन वपरासी) कूएँ के पानी में राख डाला हुआ पानी

नमुने का संशोधन का परिणाम (रिपोर्ट)

नमूना नं. १ : अनुपयोगी (बिन वपरासी) कूएँ का पानी के रिपोर्ट में भयंकर बीमारीयाँ फैलाये ऐसे कीटाणु दिखाई दिया, जो फेफडों, आंतो और खून को जहरीला बना देते है।

नमूना नं. २ : अनुपयोगी (बिन वपरासी) कूएँ के पानी में राख मिलाया हुआ पानी : उस पानी की रिपोर्ट में पाया गया कि यह पानी सभी कीटाणुओं से मुक्त है।

पानी का दुरुपयोग किया तो क्या होगा?

निम्न चित्रों से समझिए।

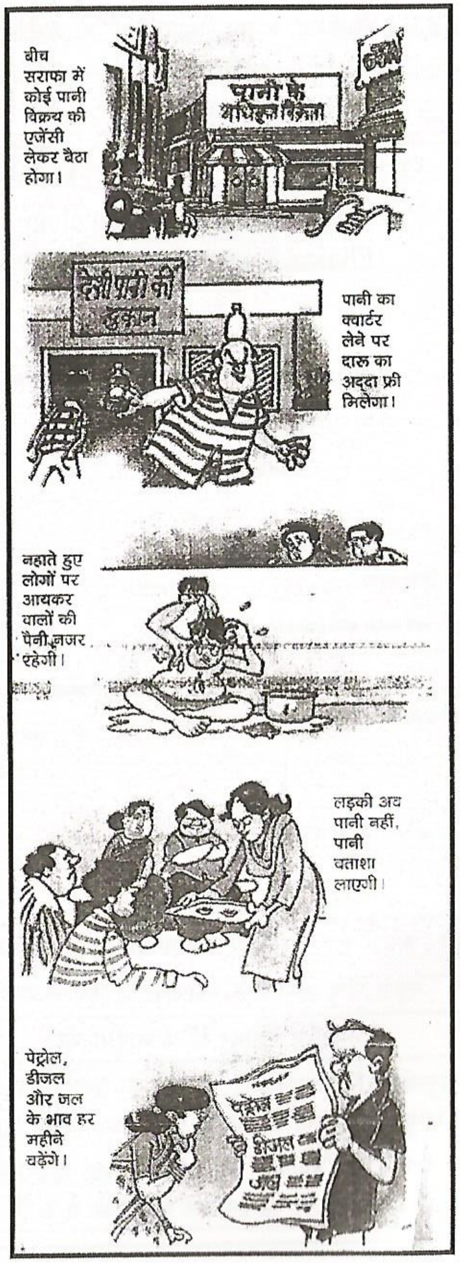

जल की रक्षा : कल की सुरक्षा

जल है तो कल है

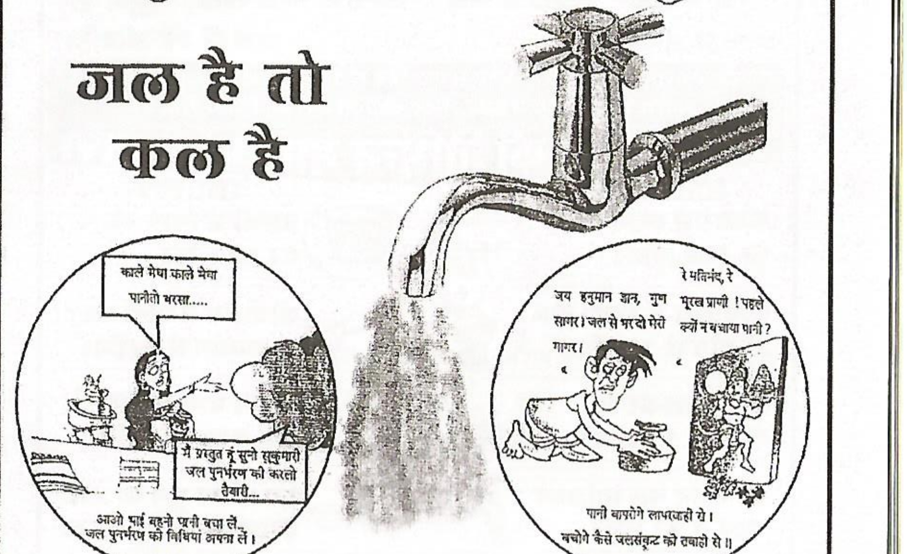

हमारे गृह पृथ्वी पर पानी की भरमार है। पृथ्वी का 3/4 भाग पानी से ढंका है लेकिन इतने सारे पानी का 98 प्रतिशत खारे पानी के रूप में समुद्रों में मोजूद है, 1 प्रतिशत से अधिक बर्फ ग्लेशियर एवं हवा में भाप के रूप में और 1 प्रतिशत से भी कम पानी पीने योग्य है, इसका लगभग 46 प्रतिशत अर्थात् आधा भाग जल भूमि के नीचे है।
अब जितना पानी बचा है वह हम अपने रोजमर्रा के काम में लाते हैं। अतः हम खुद हिसाब लगा लें कि हमारे लिये कितना कम पानी उपलब्ध है, तो आगे से कभी भी नल को बेकार खुला मत छोडना और किफायत से इस्तेमाल करना। याद रखें पानी की हर बूँद कीमती है।

जल ही जीवन है

ब्रह्माण्ड के किसी ग्रह पर जीवन तलाश करने के लिए हमारे विज्ञानी सबसे पहले ढूंढ़ते हैं, चट्टान में जमी बर्फ या मिट्टी में नमी। जानते हैं, क्यों ?

इसलिए कि जहां पानी होगा, वहीं जीवन होगा। जहां पानी नहीं होगा, वहां न वनस्पति ही होगी और न ही जीवन की कोई संभावना। हम 'हैं' क्योंकि हमारी धरती पर पानी है। जब पानी नहीं रहेगा तो हम भी नहीं बचेंगे, लेकिन इतनी दूर की बात कौन सोचता है? शहरों में नल व बोरिंग, कस्बों में कुएँ व हैंडपंप, गाँवों में तालाब और नाड़ी, जब तक इनमें पानी है हम बेफिक्र होकर उसका उपयोग करते हैं। घरों में, दफ्तरों में, बाग–बगीचों में, लॉन में, गैरिज में पानी को बेहिसाब काम में लेते हैं जैसे इसका कोई मोल है ही नहीं।

दरअसल पानी को हम अपने हिस्से में आई जायदाद मानते हैं जबकि वह है समूचे समाज की संपदा। पानी पर हक है पेड़–पौधों का, पशु–पक्षियों का और गरीब–अमीर सबका, लेकिन हमारा रवैया होता है दूसरे की प्यास की कीमत पर अपना आनंद भोगने वाला।

जरा मरुस्थल की ढाणियों की ओर झांक कर देखिए कि कितने मील चलकर औरतें पानी लाती हैं, जरा सूखती फसल के आगे लाचार किसान की आंख में झांक कर उसका पानी नापिए, जरा अपने ही शहर की किल्लत वाली बस्तियों में पानी की मारा–मारी देखिए और महसूस कीजिए कि पानी कितना कीमती है। वहां बूंद–बूंद अनमोल है और हम यहां लापरवाही, मौज–शौक या अपने शगल के पीछे हर रोज कितना सारा पानी बर्बाद कर देते हैं।

अक्सर हम पानी बचाने की इच्छा रखते हुए भी विशेष कुछ कर नहीं पाते। शायद इसलिए कि पानी बचाने के तरीकों के बारे में हम ज्यादा कुछ नहीं जानते। लेकिन जरा–सा ध्यान दें, तो आप हर रोज पग–पग पर पानी बचा सकते हैं।

इसमें अधिक पानी व्यय होता है

ऐसा करने पर पानी अधिक नहीं लगता

अलग–अलग धोने में अधिक पानी लगेगा

ऐसी थाली को अधिक पानी नहीं लगेगा

इसमें कम पानी नहीं लगता

इसमें पानी की बचत है।

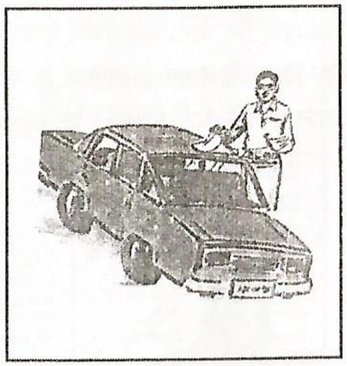

अजैन के यहाँ अमृत

उज्जैन-इन्दौर के बीच में तराना गाँव के बाबूलालजी मास्टर सा. के यहाँ पूरे वर्ष भर ही धोवन पानी मिलता है, उनके यहां सुबह 5 बजे बर्तन मंजते हैं और वे पानी को संभालकर रख देते हैं।

चौमासा शुरु होने के बाद 4 माह कोई संत सति नहीं पधारते फिर भी वे नित्य धोवनपानी रखते हैं।

है ना प्रेरणास्पद जानकारी

महात्मा गांधी ने 40 वर्ष की उम्र के बाद कभी रात्रि भोजन नहीं किया।

क्या आप जानते हैं?

रात्रि भोजन त्याग से 12 व्रतों का पालन हो सकता है।

- **प्रथम व्रत हिंसा:** रात्रि में मक्खी, मच्छर, आदि प्राणी भोजन में गिरकर मर सकते हैं। मरते हैं।
- **द्वितीय व्रत झूठ:** छुप-छुप कर होटल में खाना। पूछने पर झूठ बोलना पड़ेगा।
- **तृतीय व्रत चोरी:** होटल का पैसा चुकाने के लिए चोरी करना पड़ेगी।
- **चतुर्थ व्रत अब्रह्म:** होटल में जाने वाला धीरे-धीरे व्यभिचार आदि की ओर प्रवृत्त होता है।
- **पंचम व्रत परिग्रह:** व्यापार शीघ्र बंद करेंगे तो ही दिन में भोजन कर पायेंगे। इस प्रकार परिग्रह नहीं बढ़ेगा।
- **छठा व्रत दिशा:** रात्रि भोजन त्याग वाला ज्यादा दूर दिशाओं में भ्रमण नहीं करेगा। इतनी ही दूर रहेगा जिससे समय पर पहुंचकर भोजन कर सके।
- **सातवाँ व्रत:** शीघ्र खाने की दृष्टि से द्रव्य कम लगायेगा।
- **आठवाँ अनर्धदंड:** रात्रि में नहीं बनाने से अनर्थदंड से बचेगा।
- **नवमाँ व्रत सामायिक:** शीघ्र भोजन हो जाने से सामायिक आदि कर सकेगा।
- **दसवाँ व्रत:** 14 नियम पालन में सरलता होगी।
- **ग्यारहवाँ:** चोविहार का अभ्यास होने से पौषध आदि करना सरल हो जायेगा।
- **बारहवाँ अतिथि संविभाग:** समय पर खाने से संत-सति को बहराने का लाभ मिलेगा:

रात्रि भोजन से हानि

1. जीव हिंसा का दोष लगेगा।
2. दिन में सूर्य रोशनी से विटामिन ''डी'' प्राप्त होगा।
3. रात्रि में खाकर सीधे सो जाते हैं। इससे पाचन ठीक नहीं होता।

भोजन रात्रि में करने से भोजन में

यदि:

जू खाने में आवे तो जलोदर रोग हो सकता है।

मकड़ी खाने में " "	कुष्ठ रोग " "	
मक्खी " "	हैजा " "	उल्टी हो जावे
चींटी " "	पित्त " "	बुद्धि भ्रष्ट हो
छिपकली " "	मृत्यु हो सकती है।	
केश (बाल) " "	स्वर भंग हो सकता है।	

प्रश्न:

रात्रि में प्रकाश में खाने से कोई नुकसान नहीं होता। रात्रि में लाइट कितनी भी हो मच्छर आदि आ जाते हैं किन्तु सूर्य के लाइट में ये जीव नहीं दिखते। दिन में वृक्ष कार्बनडाइ ऑक्साइड (CO_2) लेते हैं और आक्सीजन छोड़ते हैं। ऑक्सीजन तंदुरुस्ती के लिए आवश्यक है।

रात्रि में यह क्रम उल्टा हो जाता है अर्थात् वृक्ष आक्सीजन लेते हैं और कार्बनडाइ ऑक्साइड छोड़ते हैं। इस कारण वायुमण्डल दूषित हो जाता है। सूर्य की रोशनी का स्वभाव सूक्ष्म जीवों को नष्ट करने का होता है। बिजली में यह गुण नहीं है इस कारण बल्ब, ट्यूब लाइट आदि में रात्रि के समय ऐसे सूक्ष्म जीव दिखते हैं एवं सूर्य की रोशनी में वे नहीं दिखते।

रात्रि भोजन निषेध के पक्षकार कौन?

❖ महाभारत

वृथा एकादशी प्रोक्ता वृथा जागरणं हरे:

तथा च पुष्कारी यात्रा वृथा चांद्रायणं तप

अर्थ– रात्रि भोजन करने वाला का जप–तप, एकादशी व्रत, रात्रि जागरण, पुष्कर यात्रा तथा चान्द्रायण तप निष्फल है।

❖ महाभारत शांति पर्व 15–16 श्लोक

श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर का नरक जाने के 4 कारण कहे हैं– रात्रि भोजन, परस्त्रीगमण, जमीकंद, आचार चत्वारि नरक द्वाराणि प्रथम रात्रि भोजनग, जो मुनष्य 1 मास रात्रि भोजन नहीं करता वह 15 दिन उपवास का फल पाता है।

मार्कण्डेय पुराण अ. 13 श्लोक 2

अस्तंगते दिवानाथे आपां रुधिर गुच्यते

अन्नं माससमं प्रोक्त, मार्कण्डेय महर्षिणा।

सूर्यास्त होने के पश्चात् पानी पीना खून पीने के समान है। अन्न भक्षण करना, मांस भक्षण समान है।

स्वामी कार्तिकेय महाराज

जो रात्रि भोजन नहीं करता वह 1 वर्ष में छ: मास उपवास का फल पाता है।

ऋषीश्वर भारत ग्रंथ में

जो कोई शराब पिए, मांस खाए, रात्रि भोजन करे, जमीकंद खाए उनकी तीर्थयात्रा करना, जप–तप करना, एकादशी करना, जागरण करके विष्णु भगवान का कीर्तन करना, पुष्कर स्नान करना चान्द्रायण तप करना व्यर्थ है।

जैन शास्त्रों में रात्रि भोजन त्याग का विधान कहाँ–कहाँ है?

- दशाश्रुत स्कंध में श्रावक को 11 प्रतिमा में पांचवी प्रतिमा में रात्रि भोजन की मनायी है।
- दशवैकालिक सूत्र में चौथे अध्ययन में 5 महाव्रत के साथ छठा रात्रि भोजन व्रत है।
- दशाश्रुत स्कंध में 21 सबल दोष में एक दोष है।
- नशिथ सूत्र में साधु–साध्वी यदि रात्रि भोजन करें, करावें या अनुमोदन करें तो चातुर्मासिक प्रायश्चित का विधान है।

रात्रि भोजन नहीं करने से लाभ

1. संत–सति को बहराने का लाभ
2. त्याग की आदत हो जाने से उपवास करने में सरलता होगी।
3. जल्दी खा लेने से स्वयं की धार्मिक आराधना होगी।
4. परिवार की महिलाएँ शीघ्र कार्यमुक्त होकर अपनी आराधना कर सकेंगी।
5. अहिंसा व्रत का पालन होगा।
6. भगवान की आज्ञा का पालन होगा।

दिन में जिमे देवता, नर जिमे परभात

राक्षस जिमे रात को, और कहूँ क्या बात

राक्षस का दूसरा नाम है निशाचर। निशा यानि रात्रि, यानि खाने वाला। इस प्रकार रात्रि में खाने वाले को निशाचर कहते हैं।

BREAK FAST

अंग्रेजी में सुबह के नाश्ते को कहते हैं: Break Fast, Fast यानि उपवास। Break यानि तोड़ना। इस प्रकार अर्थ होता है उपवास को तोड़ना। उन अंग्रेज लोगों का रात्रि में उपवास होता होगा। उसे सुबह तोड़ते होंगे। जिसे जैन लोग ''पारणा'' कहते हैं।

❖ रात्रि भोजन त्याग का अभ्यास कैसे करें?

1. पक्षी रात्रि में नहीं खाते हैं।
2. संत सति रात्रि में नहीं खाते हैं।
3. बाढ़ आने पर कई दिनों तक नहीं मिलता।
4. ऑपरेशन के 24 घंटे पूर्व से आहार पानी छोड़ना पड़ता है।
5. भूकंप में कई मकान ध्वस्त हो जाते हैं उनमें फंसे लोगों को कई घंटों दिनों तक खाने को नहीं मिलता।

- ❖ ऐसे दृष्टांतों को ध्यान करके मनोबल बढ़ावे।
- ❖ हमारे धर्म का प्राण रात्रि भोजन त्याग है। इस पर गर्व करने पर हमारा मानस त्याग की ओर बढ़ता है।
- ❖ प्रारंभ में कभी-कभी त्याग करके अभ्यास किया जा सकता है।
- ❖ रात्रि भोजन त्याग के लाभ का चिंतन करते रहिये।
- ❖ रात्रि भोजन त्याग से 1 वर्ष में छः मासी तप का लाभ मिलता है।

❖ वैज्ञानिक मत एवं चिंतन

प्रकाश की प्राप्ति के साधन बहुत है जैसे सूर्य से, चन्द्र से, तारा, बल्ब, गैस, मोमबत्ती, दीपक कंडील आदि।

सूर्य के प्रकाश को तिकोने कांच (प्रिज्म) से गुजारते हैं तो वह नौ अंशों में बंटता है। जिसमें सात रंग तो स्पष्ट दिखते हैं। जिसमें पहला बैगनी (violet) अंतिम लाल होता है।

बैंगनी के बाहर भी एक प्रकाश अंश होता है जिसे महसूस करते हैं उसकी गर्मी के आधार से जिसे पराबैंगनी कहते हैं। इसी प्रकार लाल रंग के बाहर के प्रकाश अंश को इंफ्रारेड कहा जाता है, जो कि गर्म होती है।

सूर्य अपने उदयकाल से 48 मिनट पूर्व ही दिखने लग जाता है एवं वास्तविक अस्तकाल के 48 मिनट बाद तक दिखता रहता है। इससे स्पष्ट होता है उपयुक्त गर्म किरणें सूर्योदय के 48 मिनट बाद पृथ्वी पर आती हैं एवं सूर्यास्त के 48 मिनट पहले आना बंद हो जाती हैं।

इसलिए सूर्योदय के 48 मिनट बाद खाना चाहिये जिसे जैन धर्म में नवकारसी कहा जाता है। सूर्यास्त के 48 मिनट पूर्व खाना चाहिये जिसे जैन धर्म में ''दिवस चरिम'' कहा जाता है, क्योंकि भोजन के पूर्व पाचन के लिए अल्ट्रा वायलेट एवं इंफ्रारेड रूपी गर्म प्रकाश जरूरी है।

वैष्णव लोग सूर्य ग्रहण के समय भोजन करने का मना करते हैं क्योंकि उस समय गर्म प्रकाश वाली दोनों किरणों की प्राप्ति नही होती है। इसलिए जरूरी है कि हम सूर्य के सद्भाव में भोजन करें।

कई कीट-पतंगें सूर्य के सद्भाव में सक्रिय नहीं होते, सूर्यास्त होते ही सक्रिय हो जाते हैं।

❖ दोहे स्तवन

- दिवस गँवाया काम में रात्रि गवायी खाय
  हीरा जैसा मनुष्यभव, कोडी बदले जाय
- दिन में जिमे देवता, नर जिमे परभात
  राक्षस जिमे रात को, ओर कहूँ क्या बात

❖ अति शुद्ध कौन सा आहार?:

1. रात्रि में बनाना रात्रि में खाना
2. रात्रि में बना सुबह (दिन) में खाना
3. दिन में बनाया रात्रि में खाना
4. दिन में बना कल खाना
5. दिन में बना आज दिन में खाना

ये 5 प्रकार है इसमें सर्वथा शुद्ध 5वां प्रकार है कि आज दिन में बनाया और आज ही खा लेना।

❖ **विभिन्न गतियों के आहार:**

- सिद्ध भगवान आहार नहीं करते
- आहर तीन प्रकार का

  ओज–

  रोम–

  कवल–
- देवता नारकी मनोभक्षी होते हैं।
- पशु–पक्षी, मनुष्य तीनों आहार करते हैं।
- पक्षी रात्रि में आहार नहीं करते।

देव का भोजन समय सबेरे
ऋषियों का भोजन समय दोपहर को
पितृजनों का भोजन समय तीसरे प्रहर पश्चात
राक्षसों का, दैत्यों का भोजन समय रात्रि में

रात्रि भोजन त्याग करना, किसके लिए सरल है संत–सति के लिए या आपके लिए

आओ विचार करें:

रात्रि भोजन त्याग करना सरल किसके लिए?

संत सतिः होटल में नहीं खा सकते। दुकान से नहीं खरीद सकते। साथ में नहीं रख सकते। टिफिन मंगवा नहीं सकते। मनचाहा बनवा नहीं सकते। कहीं गोचरी जावे तो पूछना पड़ता है किसलिए बनाया?

दो कोस से अधिक दूर आहार नहीं ले जा सकते। सुबह पोरसी पूर्व लाया आहार शाम तक वापर नहीं सकते।

श्रावक श्राविका: रात्रि हो जावे तो रास्ते में होटल का उपयोग कर सकते हैं। खरीद कर खा सकते हैं। टिफिन भी मंगवा सकते हैं। कितनी भी दूर ले जा सकते हैं। इस प्रकार चिंतन करने पर लगता है कि संत सति की अपेक्षा श्रावक श्राविकाओं के लिए सरल है रात्रि भोजन का त्याग करना।

प्रसंग

जब कॉलेज में पढ़ते थे। उस समय कई मित्र हुआ करते थे। उन्हीं मित्रों में से एक थी रिंकी अग्रवाल।

उसने अपनी शादी में मुझे बुलाया। मैं गया। शाम के पाँच बज रहे होंगे। उनकी बहन रेणु दीदी ने देखा। तुरंत वो बोली–राजेश ! आप रात में नहीं खायेंगे।

मैंने कहां– हाँ

उनके पिताजी पूनमचन्द जी अग्रवाल ने कहा– अभी बालाजी को भोग नहीं लगा– जब भोग लग जायेगा तब ही भोजन शुरु कर पायेंगे।

असमंजस की स्थिति भोग लगाते–लगाते रात हो जायेगी।

पूनमचन्द जी ने वृद्ध बुजुर्ग व्यक्तियों से कहा– रिंकी का दोस्त जैन है वह रात्रि में नहीं खाता है। क्या अभी चालू कर सकते हैं भोजन?

बुजुर्ग व्यक्ति मना कर गये।

मैंने कहा– अंकल कोई बात नहीं सुबह का खा लेते हैं अंकल बोले ऐसा कैसे होगा? पुनः बुजर्गों के समीप जाकर अंकल उनसे बोले– क्या करे रात हो जायेगी? तब उनमें से कुछ बुजुर्ग बोले भाई ! हमें लगता है ये साक्षात बालाजी पधारे है इनको ही भोग लगाओ और चालू करो।

मुझे बीच में बैठाया गया– सभी बुजुर्गों ने थोड़ा–थोड़ा मेरे मुख में मिष्ठान्न दिया। और शुरु हो गया भोजन बस उसी दिन मेरे मन में ये भाव जम गये थे कि जिन शासन का मान अभी भी अन्य समाज में है।

रात्रि भोजन के उस त्याग के कारण ही आज मैं दीक्षा ले पाया।

गुरु कृपा वर्षा

इंदौर जब भी विचरण होता हम शाम के समय जेलरोड़ स्थित संदीप जी मेहता की दुकान पर गोचरी के लिए पहुँच जाते थे। क्योंकि उनका टिफिन उनके घर से 3 बजे नियमित आ जाता था। क्योंकि संदीप जी रात्रि भोजन के त्यागी थे। इस कारण निर्दोष गोचरी को प्राप्ति समय पर हो जाती थी। इस प्रकार रात्रि भोजन त्यागी घर परिवार संत सतियों की नजर में रहता है। शाम को संत सति उन्हीं घरों में पधार जाते हैं यानि रात्रि भोजन का त्याग करने वालों पर गुरू कृपा बरसती है।

जमीकंद/कंदमूल

सिद्ध भगवान निराहार रहते हैं। कुछ खाने से हमें यह लाभ होगा? ऐसी मानसिकता होने के कारण व्यक्ति शरीर का पोषण करता है।

पर चिंतन कीजिए कि आप अच्छा–अच्छा माल मसाला खा रहे हैं और एक आदिवासी चटनी रोटी/छाछ रोटी खाता है आप दोनों को मैदान में उतारकर कुश्ती करवायी जावे तो कौन जीतेगा? आदिवासी !

हम विटामिन की प्राप्ति के चक्कर में चाहे जो खा लेते हैं वो उचित नहीं।

एक व्यक्ति आया म.सा. डाक्टर ने कहा यह वस्तु खाओगे तो आँखे अच्छी रहेगी।

मैंने पूछा– भाई आपने कभी पशु को चश्मा लगाते देखा उनकी आँखे इसको खाये बिना ही अच्छी रहती है।

हमारे मन की कमजोरी है। जबान की स्वाद लोलुपता है उसके लिए अनंत जीवों की घात नहीं करे। भगवान जिनेश्वर देवों ने सुई की नोंक जितने जमीकंद में अनंत जीव बताये हैं।

कहीं सुना था कि कोई व्यक्ति 100 ट्रक हरी सब्जी खाता है कोई व्यक्ति सुई की नोंक जितना जमीकंद खाता है तो अधिक जीव जमीकंद खाने में मारे गये।

जब कम जीवों की हिंसा से भी हमारा कार्य हो जाता है तो अधिक जीवों की हिंसा करके खाना समझदारी नहीं है।

होटलों पर लिखा रहता है– यहाँ जैन भोजन भी मिलता है। मैंने होटल वाले से पूछा भाई जैन भोजन का मतलब – तो वो बोले बिना लहसून प्याज आलू का भोजन।

सुनकर मैं दंग रह गया। विचार आया कि जैनों की मार्केट वैल्यू अच्छी है। दुनिया तो यही मान रही है जो जैन है वो लहसून प्याज नहीं खाते।

- ❖ राधास्वामी को मानने वाले भी जमीकंद के त्यागी होते हैं।
- ❖ बालाजी को भी लहसून प्याज का भोग नहीं लगता है। हम अग्रवाल, खंडेलवाल, माहेश्वरी के घरों में जाते हैं तो पूछना नहीं पड़ता कि सब्जी में लहसून प्याज तो नहीं है। जबकि जैनों के यहाँ पूछना पड़ता है।
- ❖ लहसून प्याज आदि जमीकंद तामसिकपना पैदा करते हैं।

प्रश्न : मूँगफली जमीकंद है। क्या?

उत्तर: मूँगफली जमीकंद नहीं है। क्योंकिः

मूँगफली प्रत्येक काय होती है, यह जमीकंद नहीं है, इस सम्बन्ध में निम्न बातें कह सकते हैं:

1. किसी भी जमीकंद से तेल नहीं निकलता, जबकि मूँगफली से तेल निकलता है।
2. कोई भी जमीकंद द्विदल नहीं होता, जबकि मूँगफली द्विदल होती है।
3. जमीकंद में बीजांकुर नहीं होते जबकि मूँगफली में बीज अंकुर होते हैं (यदि दूसरे अनाज के समान इसका बीज नष्ट हो जाये तो यह फिर नहीं उग सकता)।

4. जमीकंद की एक गांठ में कई स्थान पर उगने की शक्ति होती है जबकि मूँगफली में सिर्फ एक ही स्थान पर उगने की शक्ति होती है।
5. जमीकंद को सुखाने के लिए विशेष प्रक्रिया होती है जबकि मूंगफली स्वयं सूखती है।
6. जमीकंद में ऊपर छिलका नहीं होता जबकि मूँगफली में होता है। ऐसे कई कारणों से हम कह सकते हैं कि मूँगफली जमीकंद नहीं है।

कोर्ट में मोबाइल बजा एक माह की सजा

कोर्ट परिसर में प्रवेश से पहले मोबाइल का स्विच ऑफ नहीं करना बीलिया निवासी देबीलाल पुत्र भूरा माली को बुधवार सुबह उस वक्त महंगा साबित हुआ, जब अदालत ने न केवल उसका मोबाइल सीज कर लिया, बल्कि उसे एक महीने की सजा और जुर्माने से भी दंडित किया। हुआ यूं कि देबीलाल अपने नाना गिरधारीलाल को पेशी पर कोर्ट लाया था। इस दौरान न्यायाधीश योगेश कुमार गुप्ता प्रकरण संख्या 104/10 की सुनवाई कर रहे थे। देबीलाल की बार–बार घंटी बजने पर कोर्ट के न्यायिक कार्य रोकना पड़ा। न्यायिक कार्य में बाधा उत्पन्न करने पर न्यायाधीश ने देबीलाल को न्यायिक अभिरक्षा में लेते हुए मोबाइल सीज कर लिया। बाद में देबीलाल ने भविष्य में इस तरह की पुनरावृत्ति नहीं करने का आश्वासन दिया।

पैदल चलना बहुत जरूरी

स्वस्थ और सुंदर बने रहने के लिए पैदल चलना सबसे अच्छा व्यायाम है। आज की जीवनशैली में पैदल चलना जैसे लुप्त होता जा रहा है। हर छोटे से काम के लिए वाहन पर पूरी तरह निर्भर रहना भी गलत है। किसी बहाने यदि दिनचर्या में तेज गति से पैदल चलना शामिल हो जाए तो हमें किसी अन्य व्यायाम की जरूरत नहीं पड़ेगी। यदि पैदल चलने के कुछ नियम अपनाए जाएँ और उन तरीकों से पैदल चला जाए तो तीव्र गति से इसका असर अच्छे स्वास्थ्य के रूप में नजर आएगा। पैदल चलने के लिए कोई उम्र नहीं होती है। सिर्फ आपका संकल्प और नियमबद्ध तरीका चाहिए।

कुछ नियम:

- ❖ पैदल हमेशा अकेले ही चलें ताकि आपका पूरा ध्यान आपके शरीर पर रहे तथा आप मौन रहें। मौन से आंतरिक शक्तियों का विकास होता है।
- ❖ पैदल तेज गति से धीरे–धीरे लंबा गहरी श्वास नाक से लेते व छोड़ते हुए चलें, ताकि फेफड़ों को ऑक्सीजन भरपूर मात्रा में मिले।

- सुबह खुंली हवा में घूमना अधिक फायदेमंद है। अपनी उम्र व क्षमता के अनुसार 2 कि.मी. या उससे अधिक घूम सकते हैं। जब भी घूमना बंद करें, एक झटके से न करें।
- जब आप घूमने के उद्देश्य से पैदल चल रहे हों तब खाली पेट ही पैदल चलें और पूरी तरह खर्च हो और शरीर को पूरा फायदा पहुंचे।
- घूमकर आने के पश्चात् कुछ देर शवासन करना विशेष लाभदायक है।
- पैदल आप तेज गति से इस प्रकार चलें कि आपके हाथ भी पैर की तरह आगे–पीछे गति करते रहे, ताकि कंधों व रीढ़ को पूर्ण व्यायाम मिल सके।
- जब भी आप पैदल कोई भी काम करते हैं तो ध्यान रखें कि उस कार्य को तेज कदमों के साथ नाक से श्वास लेकर तथा मुँह को बंद रखकर करें।
- जब भी आप पैदल चलें ध्यान रखें रीढ़ सीधी, गर्दन सामने व निगाह पैर से सात से दस फुट की दूरी पर हो ताकि मन में अधिक विचार न आएँ।
- सैर करने के लिए ऋतु के अनुसार कपड़े, जूते और मौजे पहनें। शुरू में कुछ कदम धीरे चलने के बाद क्रमशः अपनी गति उत्तरोत्तर धीरे–धीरे बढ़ाएँ। तेज गति से सैर करें, दौड़ें नहीं। सामान्य गति से अधिक तेज चाल की गति इतनी तीव्र हो कि पसीना आ जाए। जब पसीना आना शुरू हो जाए तो अपनी चाल धीमी कर दें और धीमे करते हुए अपनी सामान्य चाल पर आ जाएँ, फिर शवासन करें।

लाभः

तेज गति से सैर करने पर जब पसीना आने लगता है तो शरीर से अतिरिक्त मांस छँटने लगता है। शरीर छरहरा, सुडौल व फुर्तीला हो जाता है। शरीर का दर्द धीरे–धीरे छँटने लगता है। श्वसन क्रिया सुधरती है। विषाक्त तत्व शरीर से बाहर निकलने लगते हैं। अंगों में लचीलापन आने लगता है। मन व तन की अच्छी तरह सफाई होती है।

आईसक्रीम शाकाहार नहीं है

(संकलन–जित की भेरी)

– मेनका गांधी

आप अपने प्यारे–दुलारे बच्चों को तोहफे में प्रदूषित जल, ऑयलपेंट, नाइट्रेड को घोल और ढील मारने की दवा खिलाते हैं। आईसक्रीम मत खाइये। हम सभी माता–पिताओं को भी आईसक्रीम के बारे में बताना चाहते हैं, क्योंकि यह वह प्यारा ईनाम है जो

सभी बच्चों को दिया जाता है। इसमें क्या–क्या होता है? 30 प्रतिशत बिना उबला और बिना छना पानी होता है, 6 प्रतिशत चर्बी और 7 से 8 प्रतिशत शक्कर होती है। लेकिन इन सभी सामग्रियों को मिलाने से स्वादिष्ट आईसक्रीम कैसे तैयार होती है, यह जानकारी सभी को नहीं है। सबसे पहले चर्बी को सख्त करके रबर की तरह लचीला बनाया जाता है ताकि हवा भरी जाये तब उसमें समा सके। यह प्रक्रिया ठंडे कमरे में चलती है। चर्बी की ताजा परत (फेनिल बर्फ) को लगातार उतार कर दूसरे कमरे में ले जाया जाता है वहाँ अलग–अलग कई आकार के पैकेटों में भरा जाता है इस प्रक्रिया में कुछ आईसक्रीम गंदे फर्श पर भी गिरती है, अच्छी मात्रा में जमा होने पर उसे एकत्रित किया जाता है। फर्श पर पड़े रहने से उसमें आई बदबू को छिपाने के लिये उनमें चॉकलेट या कोई अन्य तेज गंध और स्वाद से आईस्क्रीम तैयार की जाती है व चर्बी के इस मिश्रण को आईसक्रीम जैसा बनाने के लिए बहुत कुछ मिलाया जाता है। बहुत कुछ में एक खास किस्म की गोंद जैसी वस्तु भी होती है, जो जानवर के अखाद्य अंगों (नाक, पूंछ, थन आदि) को उबाल कर बनाई जाती है। चर्बी के मिलने पर यह गोंद जैसी अभक्ष्य वस्तु आईसक्रीम को स्वादिष्ट , चिपचिपा और धीरे–धीरे पिघलने वाली बनाती है। जीभ और तालू के बीच आईसक्रीम इसी गोंद के कारण मजा देती है।

इस तरह आप अपने प्यारे दुलारे बच्चों को तोहफे के रूप में प्रदूषित पानी ऑयलपेंट, नाइट्रेड का घोल और ढील मारने की दवा और हवा खिलाते हैं।

कुछ ऐसी कम्पनियों का प्रमाण देखियेः

निविदा
ताजे पॉल्ट्री अण्डों के लिए
1 अक्टूबर 2001 से 31 मार्च 2002 तक प्रतिदिन 70,000 ताजे अण्डों की पूर्ति के लिए मुहरबंद निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। निविदा फार्म प्राप्त करने की तिथि 17 सितम्बर 2001 से 19 सितम्बर 2001 तथा जमा करने की अन्तिम तिथि 20 सितम्बर 2001 है।
क्रय प्रबंधक
ब्रिटानिया इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड
33, लारेंस रोड, दिल्ली – 110035
फोन : 7187184, 7196343

संकलनः पंजाब केसरी

अभक्ष्य खाद्य पदार्थः बिस्किट, केक, पेस्ट्री, चॉकलेट, चीज, ब्रेड, कोल्ड ड्रिंक्स इत्यादि....

हमारा कर्त्तव्य: ऐसी कम्पनियों के कोई भी पदार्थ काम में नहीं ले जो भारी मात्रा में जीवों की हिंसा करता हो। ऐसी कोई अन्य कम्पनियों की जानकारी हो तो हमें बताएँ।

अहिंसा के पहले सिद्धांत के साथ हम जैन और अन्य से अपेक्षा करते हैं कि हमारे इस प्रयास को अपने त्याग से सफल बनावें।

तुम थोड़ी सी खुशी के लिए किसी की हिंसा नहीं कर सकते।
तुम थोड़े से सुख के लिए किसी को पीड़ा नहीं दे सकते।
ऐसा हो कभी तो सोचना तुम जैन नहीं हो सकते।

वो कहते हैं जैन धर्म जिसे वो सादगी का इक नाम है।
औरों की खुशी, खुद का त्याग, बस यही एक फरमान है।।

सम्पर्क सूत्रः
अहिंसा जागरण अभियान
''महावीर भवन'' महावीर नगर, पाली

बंधन मुक्त होने के लिए बंधन में बंधो

- प्राण तो हर भव में मिलते हैं, पर प्रण तो करने का अवसर कभी-कभी आता है। इसीलिए कहते हैं प्राण जाये पर प्रण नही छोड़ा तीर्थंकर भगवान भी जब दीक्षा लेते हैं तब ही मनः पर्याय ज्ञान होता है।
- आपने कोई प्लॉट खरीदा। खरीदने के तुरंत बाद बाउंड्रीवाल या तार फेन्सिंग करते हो।
- 1 लाख रुपया तिजोरी में 1 वर्ष तक रहने पर उतना ही रहेगा जबकि बैंक में रखने पर (F.D.) कुछ वृद्धि हो जाती है।
- पक्खी का दिन है आपका पक्का विचार है आज रात्रि भोजन नहीं करूँगा। ब्याईजी के यहाँ गये। ब्यायजी ने कहा पधारो। भोजन करो। आप कहते हैं आज पक्खी है। ब्यायजी कहते हैं पच्चक्खाण तो नहीं हैं- चलो बैठ जाओ। आपको खाना पड़ता है।

क्यों?
क्योंकि आपके पच्चक्खाण नहीं है

- भगवान महावीर की प्रथम देशना खाली गई क्योंकि उसमें किसी ने भी व्रत पच्चक्खाण नहीं लिए।
- भगवान ने कहा जो जीव व्रत पच्चक्खाण लेंगे मरकर छठे आरे में नहीं जायेंगे।
- प्रतिक्रमण (आवश्यक सूत्र) में छठे आवश्यक में गंठिसहियं, मुट्ठी सहियं आया है जिसका अर्थ है गाँठ बंधी रहे तब तक एवं मुट्ठी बंधी रहे तब तक। अर्थात् भले ही थोड़े समय के लिए पर पच्चक्खाण लेना आवश्यक है।
- डॉ. के कहने से कुछ छोड़ेंगे तो वह आर्त ध्यान होगा। भगवान की आज्ञा या गुरू के उपदेश से छोड़ोगे तो वह धर्म ध्यान होगा।
- कोई कार्य, त्याग बिना पच्चक्खाण के करोगे तो उसका लाभ कम होगा। लायसेंस लेकर व्यापार करना एक नंबर का कहलाता है बिना लायसेंस का दो नंबर का।
- कोई कहता है पच्चक्खाण हम तो उसी समय ले लेंगे जब पाप लगेगा। उसका यह कथन उस ना समझ के समान है जो कहता है कि मैं घर में ताला उसी दिन लगा दूँगा जिस दिन चोर आ जायेंगे।

पच्चक्खाण लेने से डरे नहीं। जितनी शक्ति हो उतना ले। प्रत्याख्यान के संकलन का यह प्रथम संस्करण है। इसमें विभिन्न पुस्तकों का एवं सामान्य चिंतन का समन्वय है। इसमें ज्ञात पुस्तकें :

1. जिज्ञासे की तरंगे- पू श्री संयमप्रभाजी म.सा.
2. सुशील समाधान- पू श्री रंजना जी म.सा.
3. शिविर व्याख्यान- पू श्री श्रुतधर प्रकाशमुनिजी म.सा.
4. पू.श्री कानमुनिजी एवं गीतार्थ पू श्री पारसमुनिजी के उपदेश के संकलन
5. अन्य विस्मृत पुस्तकों का सहयोग लिया गया है।

यह ट्रायल प्रकाशन है। आप पढ़कर अपने अमूल्य सुझाव भेजने की कृपा करे। कोई संस्मरण या कोई दृष्टांत या तर्क जो प्रभु आज्ञा अनुसार पच्चक्खाण लेने वालों के मन को दृढ़ता प्रदान करे। लिख भेजे।

यह संस्करण आचार्य भगवंत पूज्य श्री उमेश गुरुदेव का समर्पित है। आज वे हमारे बीच होते तो उनके प्रत्यक्ष आशीर्वचन भी हमें जानने का मिलते।

उनके प्रयाण को यादगार बनाने के लिए कई लोगों ने आजीवन कच्चा पानी, आजीवन जमीकंद, आजीवन रात्रिभोजन व्यसन, तंबाकू, सिगरेट आदि कई प्रत्याख्यान ग्रहण किए उन समस्त पच्चक्खाण धारिओ को यह पुस्तक नियम पालन में सहयोगी बनेगी।

जिन महानुभावों ने प्रकाशन में सहयोग किया उन्हें साधुवाद।

राजेश मुनि
11/05/2012
40, तिलक पथ, इंदौर

महात्मा गांधी ने भी

रात्रि भोजन त्याग का व्रत

लिया था

गाँधीजी ने लिखा – मेरा जीवन व्रतों पर रचा गया है इसलिए कठोर व्रत लेने का निश्चय किया। इसी समय कलकत्ता और रंगून में मेरे निमित्त यजमानों को जो अनावश्यक परिश्रम करना पड़ा उसका भी स्मरण हो आया। इसी कारण मैंने भोजन की वस्तुओं की संख्या मर्यादित कर लेने का, शाम को अंधेरे से पहले भोजन कर लेने का व्रत लेना निश्चित किया।

मैने सोचा कि यदि मैं भोजन की मर्यादा नहीं रखूंगा तो यजमानों के लिए बहुत असुविधाजनक होता रहूंगा और सेवा करने की बजाय उनको अपनी सेवा में लगाता रहूंगा। इसलिए चौबीस घंटों में पांच चीजों से अधिक न खाने का और रात्रि भोजन त्यागने का व्रत ले लिया। दोनों की कठिनाई का पूरा–पूरा ध्यान कर लिया था। इन व्रतों में एक भी अपवाद न रखने का निश्चय किया। बीमारी में दवा के रूप में ज्यादा चीजें लेना या न लेना, दवा को भोजन की वस्तु में गिनना, इन सब बातों का विचार किया और निश्चय किया कि खाने की कोई चीज पांच से अधिक न लूंगा। इन दो व्रतों को आज तेरह साल हो गये। उन्होंने मेरी अच्छी परीक्षा ली है परंतु जहां एक ओर इन्होंने परीक्षा ली है, वहां उन्होंने मेरे लिए ढाल का भी काम किया है। मैं मानता हूं कि इन व्रतों ने मेरी आयु बढ़ा दी है। इनकी बदौलत मेरी धारणा है कि मैं बहुत सी बीमारियों से बच भी गया हूँ।

आगमज्ञान प्रसार समिति के प्रकाशनः

सोते हुआ सबेरा (स्तवन संग्रह)

अलबेले अभिग्रह

नानी बाई- माँ के ऊपर प्रेरणास्पद प्रसंग

क्या आप स्वतंत्रता चाहते हैं? तो पढ़िए ...

पुस्तक हेतु संपर्कः

पंकज वागरेचा	राहुल चौपड़ा	सुभाष टुकड़िया	दिनेश लोढा	प्रकाश चीपड़	तेजपाल काकल्या मिलाप काकल्या
मेघ नगर	कुशलगढ़	जावरा	बाँसवाड़ा	इन्दौर	
94254 86548	94133 06134	94259 26026	094133 06122	94250 60950	94250 89236

मुद्रण : नाकोड़ा पब्लिशर्स एण्ड प्रिंटर्स, इन्दौर # 98262 90888